भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

सुरधुनी

नमामि गंगे
गंगा प्रहरी

गंगा प्रहरी
NATIONAL GEOGRAPHIC

नमामि गंगे
भारतीय वन्यजीव संस्थान
Wildlife Institute of India

सुरधुनी

प्रथम संस्करण 2018

सम्पादक

डॉ0 रूचि बडोला

डॉ0 एस0 ए0 हुसैन

सामग्री चयन एवं रूपरेखा

गीता गैरोला

सम्पादकीय सहयोग

डॉ0 संध्या जोशी

डॉ0 परिवा डोबरियाल

हेमलता खण्डूड़ी

टाइप सैटिंग

मानसी बिजल्वाण

डिजाइन

शताक्षि शर्मा

फोटो क्रेडिट :

अभिजीत दास, अमानत कौर गिल, आशा जैन, ईशान गुप्ता, एकता शर्मा, ऐश्वर्या रामचन्द्रन, कृतोश डे, गणेश चौधरी, गौरा चन्द्र दास, तामानुड़ मित्रा, निलाद्री दासगुप्ता, परिवा डोबरियाल, मेघा श्रुति, मौमिता चक्रवर्ती, मीतू अहलावत, रहीम शेख़, रवि शर्मा, शताक्षि शर्मा, शेख जोशान अलो, विपुल मौर्या

सम्पादकीय पता

भारतीय वन्यजीव संस्थान
पोस्ट बॉक्स 18 चन्द्रबनी
देहरादून– 248001
उत्तराखण्ड, भारत
टेलीफोन न0– 0135 2640114–15/2646100
फैक्स न0– 0135–2640117
ई–मेल– ruchi@wii.gov.in

विषय सूची

हमारी बात	
भारतीय वन्य जीव संस्थान	1
कार्यक्रम – जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण परियोजना	2
मेरा रास्ता मेरा विस्तार–मानचित्र	3
साहित्य के पन्नों में गंगा – गंगा तुम बहती रहना	4
कविता – नदी जीवित है	8
लोककथा – रैदास की भेंट	9
गंगा की सामाजिकता	11
पवित्र जल मेरा जल	12
सुन्दरवन डेल्टा	13
गंगा की जैवविविधता	14
जैवविविधता पौराणिक कथाओं में – कूर्मावतार (कछुआ)	15
गंगा नदी के कछुए	16
बचाव एवं पुनर्वास केंद्र	21
गंगा प्रहरी	22
गंगा प्रहरी की कहानी उनकी जुबानी	25
बाल गंगा प्रहरी एक नई पहल	27
बाल गंगा प्रहरियों का कोना	27
मोक्षा	28
निंजा मेरा भाई	29
हमारे दस्तावेज	30

भारतीय वन्यजीव संस्थान द्वारा संचालित जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ0 रूचि बडोला तथा डॉ0 एस0 ए0 हुसैन द्वारा निर्गमित व सीमित वितरण के लिए प्रकाशित।

नदियों ने ही मनुष्य को वे सब संसाधन उपलब्ध करवाये जिससे मानव एक स्थान पर रह कर सभ्यता तथा संस्कृति का विकास कर सके। गंगा हमारी राष्ट्रीय नदी है, गंगा न केवल हमारी संस्कृति और इतिहास का आधार है बल्कि इसके साथ हमारा इतिहास, भूगोल, हमारी परम्परायें और जीवन जुड़ा है। गंगा भारत में रहने वाले समाजों की धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासतों से गहराई से जुड़ी है। गंगोत्री से गंगा सागर तक बहती गंगा का विश्व के पर्यावरण सन्तुलन को बनाये रखने में अभूतपूर्व योगदान है। गंगा आज भी दुनिया की जीवित नदियों में से सबसे बड़ी जीवित नदी है। गंगा की मुख्य धारा भारत के पांच राज्यों उत्तराखंड, उत्तरप्रदेश, बिहार, झारखंड तथा पश्चिम बंगाल में बहती है। भारत की 40% से अधिक आबादी गंगा नदी पर किसी न किसी तरह निर्भर है। मानव द्वारा अत्यधिक प्राकृतिक संसाधनों के दोहन, दुरूपयोग, मानव जनित गंदगी को समायोजित करने के प्रबंधन की कमियों, जनसंख्या का दबाव, उद्योगों के विकास से फैक्ट्रियों से निकलने वाले हानिकारक रसायनों का बेहतर प्रबन्धन न होने के तथा गंगा के तटीय भागों में की जाने वाली खेती में रासायनिक खादों के उपयोग के कारण गंगा के पानी में प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है, जिससे कि गंगा नदी की जैवविविधता खतरे में पड़ गई है।

गंगा नदी में जलीय जीवों की अनेकों प्रजातियां, पक्षी तथा जलीय पौधे पाये जाते हैं, जो पारिस्थतिकीय तन्त्र को मजबूत तथा आदर्श जैवविविधता को बनाये रखते हैं।

विश्व में सबसे अधिक जैवविविधतायुक्त देश होने के नाते भारत 1301 प्रजातियों के पक्षियों का निवासस्थल है। उसमें से गंगा बेसिन 177 प्रजातियों का निवास और प्रजनन स्थल हैं।

पूरे भारत की नदियों में मछलियों की लगभग 756 प्रजातियों में से गंगा नदी में 143 प्रजातियाँ मौजूद हैं, जो मीठे पानी में पाई जाने वाली मछलियों की प्रजातियों का 20 प्रतिशत है। इसके अतिरिक्त मेंढ़क, कछुए, मगरमच्छ, घड़ियाल, डॉल्फिन और ऊदबिलाव भी गंगा नदी में पाये जाते हैं। गंगा नदी में पाई जाने वाली जैवविविधता पारिस्थितिकी तंत्र में भोजन श्रृंखला को नियन्त्रण में रखती है तथा एक दूसरे की ऊर्जा बनाये रखती है। प्रकृति हमेशा पारिस्थितिकीय संतुलन को बनाये रखती है। राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन द्वारा भारतीय वन्य जीव संस्थान को जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण कार्यक्रम के तहत, गंगा नदी में रहने वाले जलीय जीवों के संरक्षण के लिए, गंगा के किनारे अवस्थित गाँवों में जन सहभागिता के साथ परियोजना को विकसित करने का कार्य सौंपा गया है। इस परियोजना के तहत गंगा किनारे स्थित गांव के लोगों के साथ गंगा तथा उसकी जैवविविधता के संरक्षण के विषय में जानकारी दिये जाने तथा उनका जुड़ाव बनाने के लिए बैठकें, सम्पर्क, प्रशिक्षण, कार्यशालाएं तथा जन जागरूकता के कार्यक्रम आयोजित किये जा रहे हैं। ग्राम समुदाय के बीच से युवाओं का गंगा प्रहरी के रूप में चयन इस परिकल्पना के साथ किया जा रहा है कि परियोजना की समाप्ति के पश्चात् ये गंगा प्रहरी गंगा की जैवविविधता को संरक्षित करने के लिए निरंतर कार्य करते रहेंगे। बाल गंगा प्रहरियों के रूप में स्कूली बच्चों को जोड़ा जा रहा है। ये बच्चे देश का भविष्य हैं, जो कि जलीय जीव एवं गंगा संरक्षण के महत्व को समझकर इस संदेश को आगे बढ़ाने में प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेंगे। इस पुस्तिका को प्रकाशित करने का उद्देश्य है कि परियोजना द्वारा किये जा रहे कार्यों को आम जन–मानस् तक पहुँचाया जा सके तथा किए जा रहे कार्यों का दस्तावेजीकरण किया जा सके।

डॉ0 रूचि बडोला
वैज्ञानिक ''जी'' एवं संस्थापक (गंगा प्रहरी)
भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून

भारतीय वन्यजीव संस्थान

वर्ष 1982 में स्थापित, भारतीय वन्यजीव संस्थान पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अधीन एक स्वायत्त संस्थान है। इसका मुख्य उद्देश्य वन्यजीव विज्ञान के विकास को परिपुष्ट करना और संरक्षण के क्षेत्र में उसके अनुप्रयोग को भारत के आर्थिक, सामाजिक व सांस्कृतिक वातावरण के अनुरूप प्रोन्नत करना है। संस्थान वन्यजीव संरक्षण के क्षेत्र में प्रशिक्षण, शिक्षण और अनुसंधान के माध्यम से क्षमता विकास करता है तथा केंद्रीय और राज्य सरकारों को तकनीकी एवं सलाहकार सेवाएं प्रदान करता है। संस्थान को यूनेस्को ने एशिया–प्रशांत क्षेत्र में प्राकृतिक विश्व धरोहर स्थलों के प्रबंधकों को प्रशिक्षण देने के लिए श्रेणी 2 केंद्र के रूप में मान्यता दी है। संस्थान के सर्वोच्च निकाय, भारतीय वन्यजीव संस्थान–सोसाइटी की अध्यक्षता माननीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री करते हैं। संस्थान की कार्यकारी शाखा, शासी निकाय है, जिसके अध्यक्ष, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के सचिव हैं।

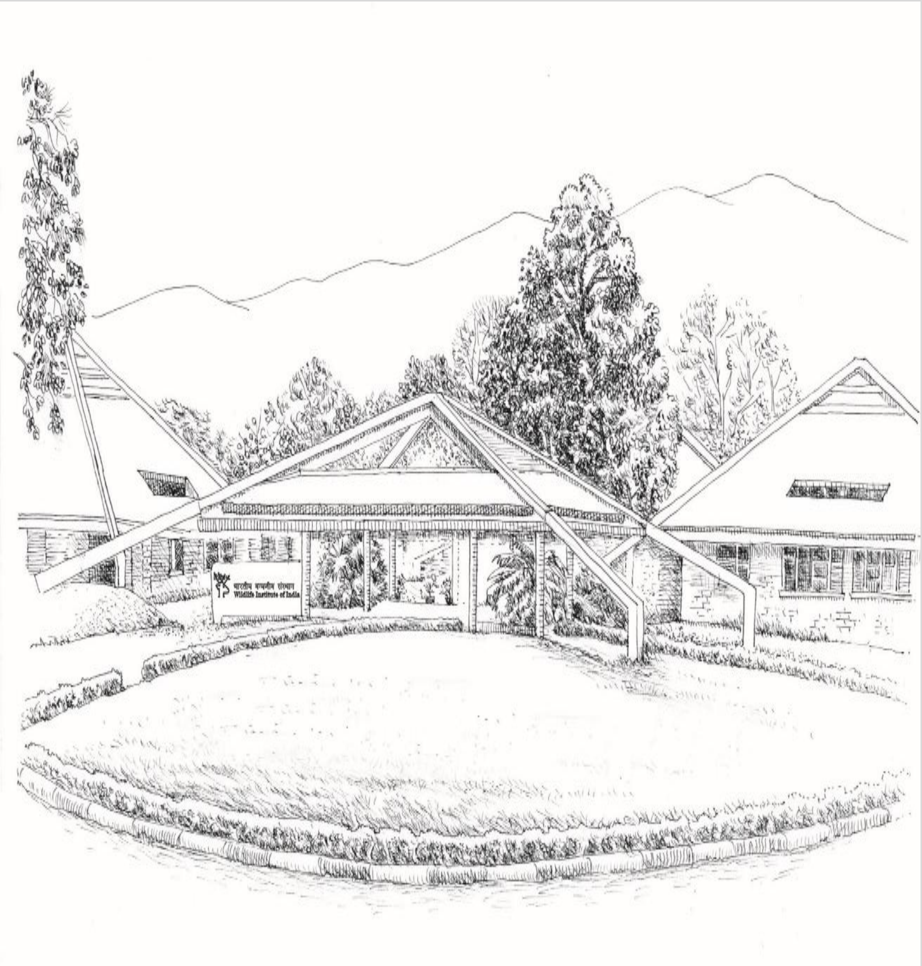

भारत सरकार ने बेसिन स्तर पर गंगा नदी के संरक्षण के लिए 'राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण' की स्थापना की है जिससे पानी की गुणवत्ता, पारिस्थितिकीय बहाव, जैवविविधता के मूल्य और पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं आदि को बनाये रखा जा सके। जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण मंत्रालय के माध्यम से 'राष्ट्रीय गंगा नदी बेसिन प्राधिकरण' ने राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन प्रारम्भ किया है, जिसका उद्देश्य गंगा नदी संरक्षण में चुनौतियों के समाधान के लिये एक व्यापक दृष्टिकोण के साथ चार अलग–अलग क्षेत्रों, अर्थात अपशिष्ट जल प्रबंधन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, औद्योगिक प्रदूषण और नदी के चौमुखी विकास में चुनौतियों को हल करना है। गंगा नदी की जैवविविधता को बहाल करने के लिए एक व्यापक नीति विकसित की गई है, इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि 2020 तक उन प्रजातियों के लिए संकट में विशेष कमी आये, जो या तो वर्तमान में लुप्तप्राय है या जिनकी निकट भविष्य में लुप्तप्राय होने की आशंका है।

"जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण"

जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की संरक्षण नीति का अभिन्न हिस्सा है। इसका उद्देश्य कई हितधारकों को शामिल करके गंगा नदी के लिए विज्ञान आधारित जलीय प्रजातियों की बहाली योजना को विकसित करना है। इसमें निम्नलिखित संरक्षण कार्यों को प्रस्तावित किया गया है: (क) भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून में विज्ञान आधारित संरक्षण योजना और सूचना के प्रसार के लिए गंगा जल जीवन संरक्षण, अनुश्रवण केन्द्र की स्थापना। (ख) गंगा नदी की जैवविविधता की रूपरेखा तैयार करना और चयनित क्षेत्रों और प्रजातियों की बहाली की प्रायोगिक परियोजना विकसित करना। (ग) संरक्षण के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण प्रजातियों (गांगेय डॉल्फिन, मगरमच्छ, ऊद्बिलाव और जलीय पक्षी) की नियमित निगरानी के लिए गंगा नदी वाले राज्यों के वन विभागों और अन्य हितधारकों की क्षमता का विकास (घ) वन और पशु चिकित्सा विभागों के सहयोग से मानव संसाधन और बुनियादी ढांचे के विकास द्वारा चयनित स्थलों पर गंगा के लुप्तप्राय जीवों के बचाव और पुनर्वास केंद्र स्थापना में राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की सहायता करना। (ड़) प्रजातियों के संरक्षण के लिए नदी के किनारे बसे समुदायों को सम्मिलित करने के लिए नीतियों का विकास एवं क्रियान्वयन। (च) गंगा नदी की जलीय जैवविविधता से संबंधित संरक्षण जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को शिक्षित करना।

भारतीय वन्यजीव संस्थान – राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन की एक पहल

मेरा रास्ता मेरा विस्तार

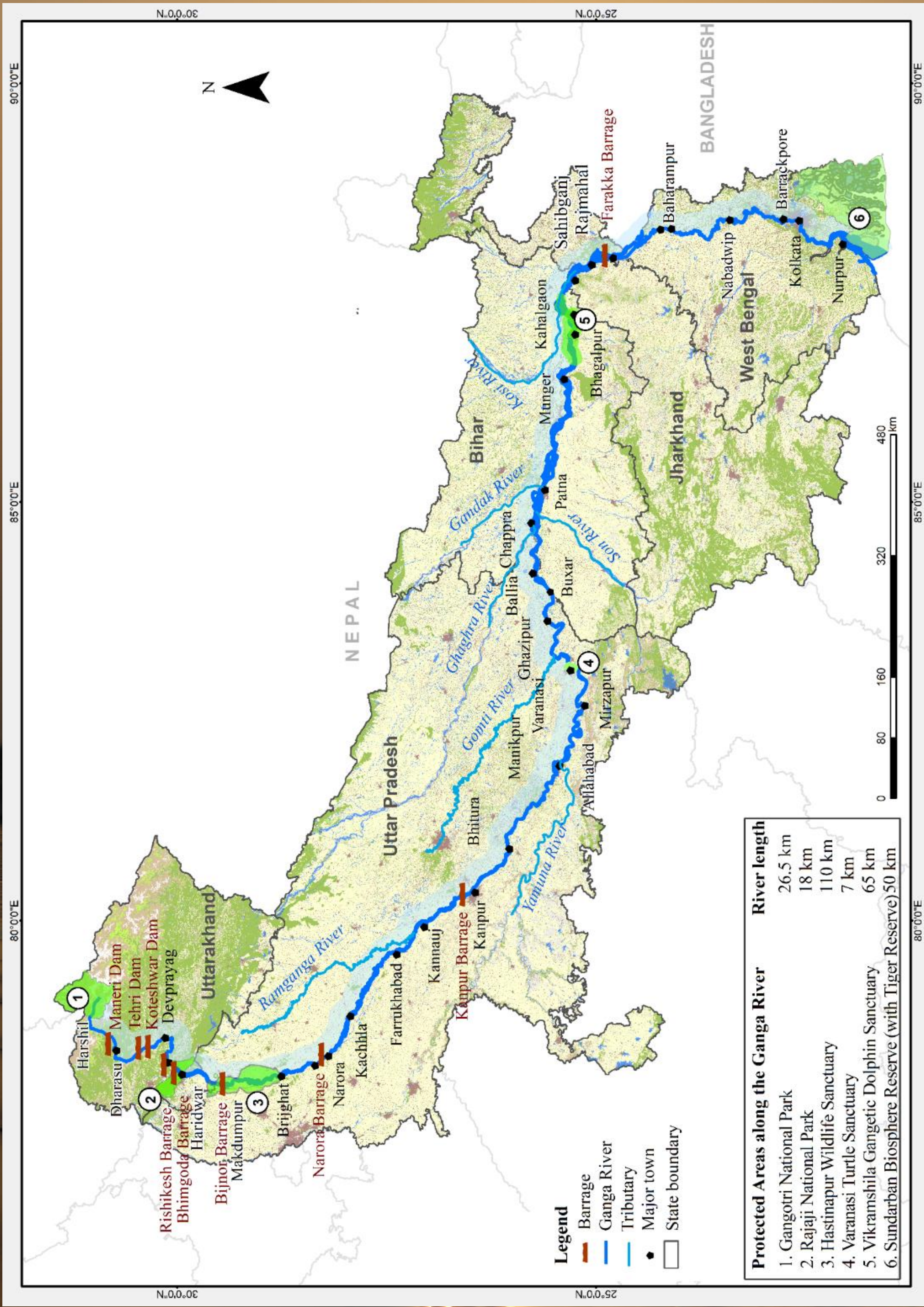

नमामि गंगे! तव पादपंकजं सुरसुरैर्वन्दितदिव्यरूपम् । भुक्तिं च मुक्तिं च ददासि नित्यम् भावानुसारेण सदा नराणाम् ।।

गंगा तुम बहती रहना

-हेमचन्द सकलानी

मैं गंगा भारत की प्राचीन संस्कृति, सभ्यता की एक जीती–जागती, बोलती आत्मा हूँ। जितना प्राचीन हिमालय है, मैं हिमालय से कुछ ही बरस छोटी हूँ, और उतनी ही प्राचीन भी हूँ मैं। भारत की महान सभ्यताओं, संस्कृतियों, इतिहास, परिवर्तनों और उत्थान–पतन की आज मैं ही एकमात्र चश्मदीद गवाह हूँ। कहते हैं कि सृष्टि की नव संरचना और सातवीं जल प्रलय के समय मनु ने मेरे तट के समीप कैलाश पर नाव बांधी और मेरे ऊपर के शिखरों से प्रलय प्रवाह को देखा। इस देश की सभ्यता, संस्कृति, धार्मिकता, सम्पन्नता का स्वर्ण युग मेरे बिना सम्भव ही नहीं है। यूँ तो विश्व में मुझसे भी बहुत बड़ी–बड़ी नदियां हैं। जिनमें मुझसे कई गुना अधिक जलराशि प्रवाहित होती है। प्राचीन काल से मानव ने जो आदर–सम्मान, प्रेम, श्रद्धा, आस्था, विश्वास मुझे दिया है वह शायद ही विश्व की किसी अन्य जलधारा को प्राप्त हुआ हो। मेरे बारे में एक ऋषि ने ब्रह्मा जी से पूछा, ''प्रभु कृपया बताएं विश्व में सबसे शुद्ध और पवित्र जल किसका है?'' ''ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया'' ऋषिवर विश्व में सबसे पवित्र और शुद्ध जल यमुना का है।'' ऋषि ने आश्चर्य से ब्रह्मा जी से कहा भगवन, मैंने तो सुना है कि सबसे पवित्र और शुद्ध जल गंगा का है। बह्मा जी ने कहा ''ऋषिवर मैंने ठीक कहा आपने जल के बारे में पूछा था, तो जल तो सबसे पवित्र और शुद्ध यमुना का ही है। गंगा का जल, जल कहां है वह तो अमृत है।''

प्राचीन ग्रन्थों में कहा गया है कि मैं नगाधिराज हिमालय की पुत्री हूँ, कुछ ग्रन्थ कहते हैं मैं स्वर्ग से धरा पर उतरी हूँ। मैं अपने जन्म के बारे में कुछ नहीं जानती। आधुनिक विज्ञान कहता है कि मेरा जन्म हिमालयी हलचलों से हुआ। इस ग्रह में हर ओर जब थल के ऊपर जल ही जल था तब जल के अन्दर करोड़ों वर्ष पूर्व हुई हलचल से, जल से भरी पृथ्वी के गर्भ से उठती चली गई शिलाएं। जल से बाहर फिर बने पहाड़, और जल के ऊपर फैलता गया मैदान। पहाड़ जब हिम रेखा से ऊपर उठे तब उन पर बादल बन कर बरसी बर्फ, पहाड़ों पर बनी दरारें, उनमें जमती गई बर्फ, बने ग्लेशियर और फिर दर्रे और ग्लेशियर के अन्तिम छोर से बह निकली मैं और कहलायी भागीरथी, मन्दाकिनी, अलकनन्दा, और सरस्वती।

मेरे जल के साथ कई रोचक कथाएं हैं, जैसे कपिल मुनि के श्राप से ग्रसित राजा सगर के भस्म हुए साठ हजार पुत्रों को मोक्ष प्रदान करने के लिये सबके अनुरोध पर राजा भगीरथ ने मेरी, ब्रह्मा की तथा शिव की तपस्या की। चंचल, नटखट, शैतान होने और माँ के श्राप के कारण मुझे ब्रह्माजी के कमंडल में कैद होना पड़ा। भगीरथ की तपस्या से प्रसन्न हो और पृथ्वी का उद्धार करने के लिये ब्रह्मा जी ने मुझे कमंडल से मुक्त किया। नगाधिराज हिमालय के कैलाश के, उतुंग शिखर पर बैठे महादेव ने अपनी जटाओं में उलझाकर मेरे प्रचंड प्रवाह को शांत किया। शिव ने जब जटाओं से मुझे मुक्त किया तो मैं अपने नटखटपन के कारण दस धाराओं में हिमशिखरों के ऊपर बिखर गयी। हर धारा एक पवित्रतम प्रवाह बन गयी। सभी ने एक सा सम्मान–आदर पाया। मैं वही धारा हूँ जिसने राजा भगीरथ का अनुसरण किया था, तब से ही मैं भगीरथी कहलायी। मेरे प्रचंड प्रवाह में पुरवा के वंशज राजा जाह्नु की यज्ञशाला डूब गई तब क्रोधित होकर जाह्नु ने मुझे उदरस्थ कर लिया था। मेरी पवित्रता को देख देवताओं ने जाह्नु से प्रार्थना की। जाह्नु ने मुझे अपने कानों से मुक्त कर दिया। यहां पर मैं जाड़गंगा अर्थात जाह्नवी कहलायी। मेरे बारे में यह भी पौराणिक कथा है कि ब्रह्मा के श्राप के कारण हिमालय की पुत्री गंगा, पृथ्वी पर आकर राजा शांतनु की पत्नी बनी। मेरा ही पुत्र भीष्म पितामह के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

मैं कहीं भगीरथी कहलायी, कहीं गऊमुखी, जाहनवी, कहीं विष्णुपदी, कहीं मन्दाकिनी, कहीं सरस्वती, कहीं अलकनन्दा, और कहीं सुरधुनी कहलायी। मेरी ही एक धारा के समीप वेदवाणी प्रकट हुई। मैं ही स्वर्ग से उतरी देवनदी कहलायी। मेरे ही तट पर महर्षि वेद व्यास ने विश्व के महानतम ग्रन्थों महाभारत, शिवपुराण की रचना की थी।

मैं ही सरस्वती बनकर माणा पर्वत से निकली। मैं ही सतोपंथ से अलकनंदा बन निकली और पवित्र केशव प्रयाग में सरस्वती से मिली। मैं ही भगीरथी के पीछे चलती हुई गौमुख गुफा से प्रवाहमान बनी।
मैं ही शिवधाम केदारनाथ से मन्दाकिनी बन निकली और अलकनन्दा से मिलने रूद्रप्रयाग पहुंची थी। मैं ही द्रोणगिरी के पास से धौली गंगा, नंदा देवी पर्वत से ऋषि गंगा बनकर प्रवाहित हुई। मेरी पवित्रता के कारण ही मेरे बारे में कहा गया । **'गंगेति यो ब्रूयात् योजनानां शतैरपि, मुच्यते सर्व पेभ्यो विष्णु लोके स गच्छति।'** जो सौ योजन दूर से मेरा नाम लेता है वह सब पापों से छूटकर विष्णु लोक को प्राप्त होता है। मेरी गोद में अस्थि के फूल जब तक प्रवाहित नहीं किये जाते तब तक कोई स्वर्ग लोक का अधिकारी नहीं होता। मेरा विस्तार क्षेत्र यमुना पर्वत अर्थात बंदरपूंछ से लेकर नंदादेवी की पर्वत श्रंखलाओं तक फैला हुआ है।

मैं ही गोमुख गुफा से एक आवेग से परिपूर्ण थिरकती हुई निकलती हूँ। ऊँचे–ऊँचे हिमशिखरों के मध्य संकरी घाटी से निकल कर जब कुछ ही पग आगे बढ़ती हूँ तब चिरबासा पर्वत से आती एक छोटी सी सुन्दर जलधारा मुझमें समा जाती है। देवदार के घने जंगलों के बीच गोद में बसा है गंगोत्री धाम। जहाँ भगीरथ ने तपस्या की थी, यही स्थान गंगोत्री कहलाया, यहीं पर भगीरथी शिला है जिस पर बैठकर भागीरथ ने तपस्या की थी। यहाँ पर मेरा प्राचीन भगीरथ का मंदिर है जिसमें मेरी और मेरी बहिनों, यमुना, सरस्वती, लक्ष्मी, पार्वती, अन्नपूर्णा की खूबसूरत मूर्तियां हैं। शिव ने पार्वती जी से मेरे बारे में कहा था 'जो घोर कलयुग में इस जगह पर, मेरी पवित्र, जलधारा में स्नान करेगा वो वैकुण्ठ को प्राप्त होगा।'

मैं जिस दिन स्वर्ग से पृथ्वी पर उतरी वह ज्येष्ठ शुक्ल दशमी का दिन था। यह दिन आज गंगा दशहरा पर्व के रूप में पूरे भारत में मनाया जाता है। जिन स्थलों को मैंने स्पर्श किया वे पवित्र तीर्थस्थल बन गये। आज भी इस पर्व पर मेरे तट पर मेले लगते हैं।

समुद्रतल से साढ़े तेरह हजार फुट की ऊँचाई पर स्थित गौमुख से यहां की शस्यश्यामला भूमि को धन धान्य से परिपूर्ण, समृद्ध बनाने के लिये मैं निरंतर पग दर पग नीचे उतरती रहती हूं। मेरे ही कारण गंगोत्री को महात्मय ही नहीं पौराणिक प्रसिद्धि भी प्राप्त हुई। मैं कुछ ही कदम नीचे उतर पाती हूँ कि केदारताल से आकर केदारगंगा मुझमें मिलती है।

केदारगंगा से मिलने के बाद मैं पाताल लोक जैसी गहरी घाटी पहुँचती हूँ। मैं ही सरस्वती बन माणा पर्वत से निकली। मैं ही सतोपंथ से अलकनंदा बन निकली और पवित्र केशव प्रयाग में सरस्वती से मिली। केदारनाथ से मन्दाकिनी बन निकली और अलकनन्दा से मिलने रूद्रप्रयाग पहुँची। मैं ही द्रोणगिरी के पास से धौली गंगा, तो नंदा देवी पर्वत से ऋषि गंगा बनकर प्रवाहित हुई।

भैरों घाटी के नीचे सुंदर उतुंग हिमशिखरों से उछलती, कूदती, शोर मचाती किलकारियां भरती निकलकर आती हूँ। मेरी बहन जाह्नवी अहलादित होकर मुझसे मिलती है। आगे बढ़कर मैं धराली पहुँचती हूँ। आगे खूबसूरत मीठे फलों की धरती अर्थात सेबों की घाटी हर्षिल है। यहाँ पर दो खूबसूरत झरने काकोरा गाड़ और जालधरी गाड़ मुझमें समाकर अपने को धन्य समझते हैं। पुराली के पास सियान जलधारा, सुनागर के पास मेहाधार से आ रही फेनिल जलधाराएं मुझसे मिलती हैं। भटवाड़ी पहुँच कर नवला नाम की नदी मुझमें मिलती है। माला के पास द्रौपदी के डाण्डा शिखर से निकली दो छोटी जलधाराएं आकर मेरे गले लग जाती हैं। अब मेरी गति कुछ मध्यम होने लगती है और मैं पहुँचती हूँ मनेरी नामक गाँव के नीचे। यहाँ मानव ने मुझे विश्राम देने के लिये एक छोटा बांध बनाया है। फिर मेरी अधिकांश जलराशि पहाड़ के अंदर निर्मित सुरंग द्वारा तिलोथ पावर हाउस उत्तरकाशी पहुँचती है। शेष जलराशि अपने प्राचीन मार्ग से होकर पहुँचती है गंगोरी नामक स्थान पर।

यहाँ पर असी गंगा अपनी सुंदरता को पहाड़ों पर से बिखेरती नीचे उतर कर मुझसे मिलती है। मैं धीरे–धीरे पहुँचती हूँ, उत्तरकाशी। गोमुख से 124 किलोमीटर दूर से यहाँ तक पहुँचते–पहुँचते मुझे अपने अंदर कुछ खोने जैसा, कुछ उदासी का आभास होता है। गंगोत्री से उत्तरकाशी के पूरे मार्ग में दोनों ओर हाथ बांधे शांत खड़े चीड़, देवदार, बांज, बुरांस मौन तपस्वी की तरह जैसे मेरे आगमन की प्रतीक्षा करते नजर आ रहे हैं। अब इन पवित्र तपस्वी ऋषि–मुनियों जैसे वृक्षों का दिखना बंद होता जा रहा है। इन ऋषि–मुनियों की छत्रछाया में मैं कब गंगोत्री से उत्तरकाशी पहुँच गयी मुझे पता ही नहीं चला।

यह प्राचीन तीर्थ नगरी जो पौराणिक ग्रन्थों में वारहाड़ा कहलायी, जिसके एक–एक पल का जीवन मैंने अपनी एक–एक लहर से देखा। यह प्रसिद्ध नगर मेरे तट के दोनों ओर बसा है। ऊपर असी गंगा है तो नीचे नाकुरी के पास वरूण गंगा है। पूर्व दिशा में हरि पर्वत तथा दक्षिण में पुराणों में उल्लेखित बालखिल्य पर्वत है जो इसे घेरे रहते हैं।

मेरी धारा के समीप अति प्राचीन विश्वनाथ का मंदिर है। जहाँ परशुराम मन्दिर में एक त्रिशूल है। पौराणिक कथा है कि देवताओं और असुर संग्राम में इसी त्रिशूल का प्रयोग हुआ था। मेरे तट के दूसरी ओर है तिलोथ विद्युतगृह है जहाँ मेरी असीम शक्ति का उपयोग कर बिजली पैदा की जाती है। मकर संक्राति में माघ मेला मेरे तट पर ही आयोजित होता है। उत्तरकाशी नगर के ठीक नीचे मेरी जलराशि को बाँध बनाकर रोका गया है। शेष जलराशि फिर छोटा–मोटा संगीत बिखेरती पहुँचती है धरासू जहाँ मुझसे मिलने आती है दहशीगाड। धरासू में फिर मेरी जलशक्ति का उपयोग कर बनायी गयी है मनेरी भाली विद्युत गृह परियोजना।

मैं धरासू से लहराती, बलखाती, इठलाती चिन्याली, भल्डियाना होकर आगे की ओर निकलती हूँ। मेरे मार्ग में स्थित सिराईं में गाँव के नीचे पहाड़ की तलहटी में मेरे किनारे पर ही प्राचीनकालीन वशिष्ठ गुफा थी। जहाँ बैठकर महामुनि वशिष्ठ ने मुझे स्नेह से युगों तक निहारा था। यहीं पर खतलिंग ग्लेशियर से निकलकर आती बहन भिलंगना मुझसे मिलती है। भागीरथी–भिलंगना के संगम को पुराणों में धनुष तीर्थ के नाम से जाना जाता था। यही संगम पुराणों में गणेश प्रयाग के नाम से भी प्रसिद्ध रहा।

6 दिसम्बर 2001 को लाखों वर्ष पूर्व का यह पवित्र प्रयाग झील की गहराइयों में गुम हो गया। टिहरी एक ऐतिहासिक शहर था। मैंने श्रीदेव सुमन, नागेन्द्र सकलानी की शहादत वाले इस शहर को बेहद उदास मन से अपनी आंखों से, अपनी अथाह जलराशि में डूबते देखा है।

यहीं पर बना है विश्व का प्रसिद्ध टिहरी बाँध। कुछ आगे चलकर कोटेश्वर गाँव के समीप फिर मुझ पर बाँध का निर्माण किया गया है। कोटेश्वर के बाद मैं थोड़े समय के लिये मानव से मुक्ति पा जाती हूँ और पहुँचती हूँ पवित्र पंच प्रयाग में से एक प्रयाग, देवप्रयाग। जो गोमुख से 268 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

देवप्रयाग वह पवित्र तीर्थ स्थल है जहाँ रघुकुल के राजा राम ने सीता, लक्ष्मण के साथ शिव की तपस्या की थी। यहां पर रघुनाथ जी का मंदिर है। जिसमें प्राचीन भगवान रघुनाथ जी की मूर्ति है। इस पवित्र तीर्थस्थल पर अलकनन्दा मुझसे मिलने आती है। देवप्रयाग में हम सभी बहनों की जलराशि मिलकर एक हो जाती हैं और तब मैं सम्पूर्ण गंगा के रूप में मुस्कुराती हूँ। हमारा संगम विश्व को संदेश देता है कि बिना किसी भेदभाव के एक होकर विश्व का कल्याण करो।

यहाँ से निकल कर मैं पहुँचती हूँ व्यासजी के घाट पर, जहाँ महामुनि व्यास किसी समय निवास करते थे। यहाँ पर मुझसे मिलती है मेरी एक और बहन नयार नदी। प्राचीन काल में इस व्यास घाट को सप्तसामुद्रिक तीर्थ नाम से भी जाना जाता था। पहाड़ों, घाटियों का दुर्गम सफर तय करते–करते और मंथर गति से पहुँचती हूँ ऋषि मुनियों के धाम ऋषिकेश, यहाँ खुला आसमान मुस्कराते हुये मेरा स्वागत करता है। अब मैं पहाड़ी दर्रों से निकलकर आराम से बहने लगती हूँ। बड़े–बड़े ऋषि मुनियों को मैंने अपने तट पर तपस्या करते देखा है।

यहाँ रैम्भ नामक महर्षि ने अपनी इन्द्रियों को वशीभूत करके तपस्या की थी। इसी कारण इसका नाम ऋषिकेश पड़ा। यहाँ मेरे तट पर पूरे विश्व से साधु–संत, तीर्थयात्री, पर्यटक आते हैं। महाभारत काल से पूर्व ब्रह्मा के पुत्र प्रजापति दक्ष की राजधानी हरिद्वार थी। जहाँ राजा दक्ष ने विशाल भव्य यज्ञ कराना चाहा था। शिव का एक नाम हर भी है और उनका निवास हिमालय पर। हिमालय के इस क्षेत्र की ओर, हरिद्वार से प्रवेश किया जाता है। इसी कारण इसे स्वर्ग का प्रवेश द्वार हरिद्वार कहा गया। मेरे किनारे पर पवित्र हर की पौड़ी है। यहीं पर मेरा प्राचीन मंदिर है। यहीं संध्या के समय मेरी आरती होती है। मेरी पवित्र जलराशि में प्रातःकाल से सांय तक प्रतिदिन तथा कुम्भ के समय लाखों लोग स्नान करते हैं। (रसखान, रहीम, तानसेन, शेखआलम, जैसे कवियों ने तथा अकबर और औरंगजेब जैसे शासकों ने भी मेरी पवित्रता को आदर की दृष्टि से देखा।)

मेरे किनारों से ही चारों धामों और पवित्र पंच प्रयागों, पंच केदारों, पंच बदरी, पवित्र तीर्थस्थलों, संगमों की यात्रा प्रारम्भ होती है। यहाँ मैं पूरी तरह मैदान में उतर कर बहने लगती हूँ। इसी कारण हरिद्वार को गंगाद्वार भी कहा जाता है। प्राचीन काल में मेरे इस पवित्र शहर को मायापुरी के नाम से जाना जाता था। जैसे–जैसे मैं अपने इस प्राचीन शहर को छोड़कर आगे बढ़ने लगती हूं, शांत बहने लगती हूं। अपने पिता नगाधिराज हिमालय का घर छोड़ना मुझे कष्टदायी लगता है। अब मेरी लहरें खामोशी से सैकड़ों मील की यात्रा तय कर तीर्थराज प्रयाग पहुँचती हैं।

मेरी दो बहनें सरस्वती, यमुना, जो शिव की जटाओं से मुक्त होते समय मुझसे बिछुड़ गयी थी। अब यहीं मुझसे मिलती हैं। यही स्थान त्रिवेणीघाट कहलाता है। यहीं पर हर बारह वर्ष बाद, कुम्भ–महाकुम्भ लगता है। यहाँ से फिर मैं वाराणसी पहुँचती हूँ।

बिहार के अनेक शहरों से गुजरते हुये मैं पश्चिम बंगाल पहुँचती हूँ। कलकत्ता के डायमंड हार्बर से गुजर कर गंगा सागर में अपने को समाहित कर देती हूँ। सूर्य, मेरी जलराशि को अपनी पवित्र रश्मियों से वाष्प में परिवर्तित कर देता है। मैं बादल बनकर हवाओं के पंख पर सवार होकर उड़ती हुई जा पहुँचती हूँ, अपने प्यारे हिम शिखरों के ऊपर। आज मानव द्वारा सारी गंदगी, कूड़ा करकट, सड़े गले शव, कारखानों का जहरीला रसायन मुझमें प्रवाहित किया जा रहा है। काश मानव मेरी पवित्रता, शुद्धता, स्वच्छता का महत्व समझ पाता, और समझ पाता कि मैं हिमालय ही नहीं बल्कि भारत की कितनी बहुमूल्य सम्पदा हूँ। प्रदूषण के भार ने मेरी लहरों की गति को थाम दिया है। अब वह खुशी महसूस नहीं होती जो मुझे गोमुख से देवप्रयाग तक के सफर में होती थी। आगे का सफर बहुत अच्छा नहीं है। हरिद्वार से मैं मैदानी क्षेत्रों में आ जाती हूँ। जहाँ–जहाँ से मैं बहती हूँ प्रदूषण भी साथ–साथ आ जाता है। मेरे अंदर रहने वाले मेरे छोटे भाई–बहन जलीय जीव जैसे मछलियाँ, डॉल्फिन, कछुए, ऊदबिलाव, घड़ियाल, मगरमच्छ आदि व जलीय वनस्पतियों की सेहत खराब हो रही है।

मणिपुर की पहाड़ियों से निकलकर चांदपुर के पास मेरी छोटी बहन मेघना भी आ मिलती है। हम मेघना नाम से ही अनेक जल वितरिकाओं में बंटकर बंगाल की खाड़ी में मिल जाती हैं। मेरी लम्बाई 2525 किलोमीटर नापी गई है।

नदी हमारा इतिहास है,

नदी हमारा वर्तमान है,

नदी हमारा भविष्य है।

*****

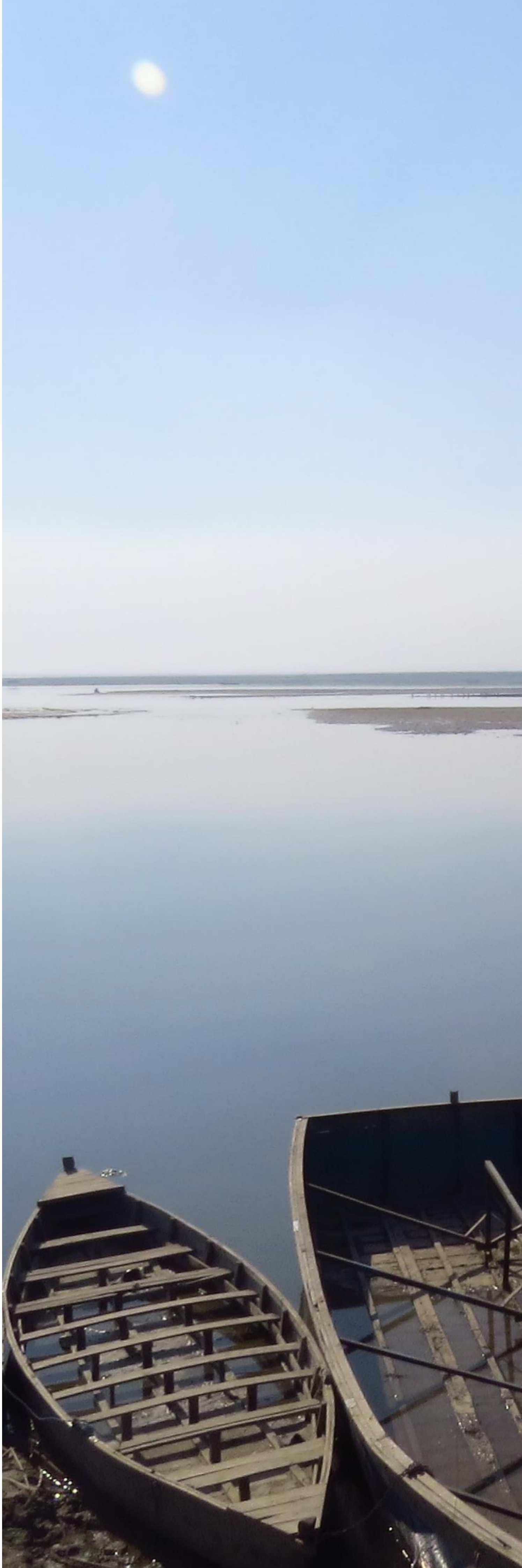

नदी जीवित है

– माया मृग

भीतर से जाती हैं मछलियाँ
तो उदास हो जाती है नदी
गहरे पानी में तब भी शेष रहती है हलचल
कोई छोटा सा घोंघा चुपके से देखता है
सन्नाटे की आहट से भरकर सहम कर सिमट जाता है
खोल में पहले की तरह
मछुवारा नदी के कान में कहता है
सुनी सुनाई बातों पर विश्वास मत करना
सच कहता हूँ
जहाँ एक घोंघा रह–रहकर है
सिर निकालता है बाहर
और बार–बार चला जाता है
खोल के अन्दर
वहीं बची है हलचल

*****

रैदास की भेंट

पहले निराकार हुआ। निराकार से फुंकार, फुंकार से जल, जल से कमल और कमल से ब्रह्मा पैदा हुए। निराकार ने ब्रह्मा को चार वेद, अट्ठारह पुराण और बाईस गायत्रियां दी। ब्रह्मा उन्हें सुबह पढ़ते, शाम को भूल जाते थे। उन्हें बड़ी चिंता हुई कि आखिर यह सारी विद्या किस प्रकार कंठ में आए? किसी ने कहा गरूड़ पर्वत पर जाओ। ब्रह्मा ने वेद, पुराण और शास्त्र बगल में दबाए और चल दिए।

उस समय गरूड़ पर्वत पर देवताओं की सभा लगी थी। विष्णु, महादेव, नारद आदि सभी बैठे थे। निराकार, कबीर, कमाल और रैदास को किसी ने नहीं बुलाया। सबने यही कहा, 'हम उन्हें नहीं बुलाएंगे। वे अपवित्र हैं। वे नीचों के घर खा आते हैं। उन्हीं का साथ करते हैं।' ब्रह्मा ने उन्हें अपनी परेशानी बताई। सब देवता सोच में पड़ गए, क्या करना चाहिए। नारद ने कहा, 'गंगा की सेवा करो। मैंने बारह वर्ष ऐसा किया, तब मुझे कुछ ज्ञान हुआ। तुम भी गंगा की शरण में क्यों नहीं चले जाते'।

ब्रह्मा ने नारद की बात मान ली और उसी समय गंगा के पास चल दिए। रास्ते में रैदास चमार मिले। रैदास बड़े भक्त थे। वह बैठे चमड़ा सी रहे थे। उन्होंने दूर से ब्रह्मा को नमस्कार किया। ब्रह्मा ने बदले में सिर हिलाया और चलने लगे। रैदास ने रोका,' आज कहाँ से रास्ता भूले विधाता?' ब्रह्मा चिढ़कर बोले, 'गंगा के पास जा रहा हूँ, तुम्हें क्या?' रैदास ने कहा, 'गंगा मैया के पास तो मुझे भी जाना था पर इस समय मैं काम पर लगा हूँ।' ब्रह्मा रूष्ट हुए, 'तुम चमार हो, गंगामाई तुम्हें क्यों मिलेगी?' रैदास धीरे से मुस्कराए,' अच्छा तो यह मेरी भेंट तो लेते जाओगे ! गंगामाई को दे देना।'

ब्रह्मा और चिढ़कर बोले,' कैसा ढीठ है? चमार की भेंट भी कहीं गंगा माई लेने लगीं ?' रैदास ने चमड़े का एक पैसा काटा और ब्रह्मा को दे दिया। ब्रह्मा सकुचाए, इस पैसे को कैसे ले जाऊं? चमार के हाथ का पैसा छूने को उनका जी नहीं कर रहा था। आखिर बात टालने के लिए उन्होंने कहा, 'गंगामाई नाराज हो जाएगी।' रैदास ने कहा, 'नहीं, गंगामाई मेरी भेंट लेने के लिए हाथ पसारेंगी, जबान खोलेंगी।' अब ब्रह्मा क्या करते? उन्होंने पैसे को जेब में रखा और रैदास को कोसते हुए आगे चल पड़े।

ब्रह्मा ने आगे जाकर पैसे को धोया, स्वयं स्नान किया और देर तक शुद्धिमंत्र पढ़ते रहे। फिर उन्होंने गंगामाई को पुकारा पर कोई जवाब न मिला। ब्रह्मा ने सोचा रैदास की भेंट के कारण मैं शायद अपवित्र हो गया हूँ। गंगामाई शायद इसीलिए छिप गई हैं। वो निराश हो गए। आखिर में उन्होंने लौटने की सोची पर सहसा उनकी आँखों की रोशनी गायब हो गई। जब भी वो गंगामाई की ओर देखते उनकी आँखें काम करतीं पर जब वह लौटने लगते तो उनके आगे अंधकार हो जाता। ब्रह्मा वहीं पर बैठ गए। तभी उन्होंने गंगा की आवाज सुनी, 'रैदास की भेंट कहाँ है?' ब्रह्मा हैरान अरे गंगा माँ ने रैदास का नाम लिया। गंगा ने तुरंत आवाज निकाली, 'रैदास ने मुझे भेंट दी थी, वह कहाँ है?' ब्रह्मा ने पैसा निकाला। गंगा ने हाथ बढ़ाया फिर अपने हाथ का कंगन निकाला और कहा, 'मेरी यह भेंट रैदास को दे देना।'

ब्रह्मा ने तब कंगन पकड़ा और अपने पास रख लिया। अपनी बात वह कह ही नहीं सके। गंगामाई अंर्तध्यान हो गई। ब्रह्मा ने गंगामाई को पुकारा पर उन्होंने आवाज ही नही दी। ब्रह्मा लौट आए। रास्ते भर वे रैदास की भेंट के बारे में सोचते रहे। उस चमार की भेंट के लिए तो हाथ बढ़ाया और मुझसे बात भी नहीं की। उसे अपना सोने का कंगन भी दे दिया।

कंगन बहुत सुंदर था। उसे देखकर ब्रह्मा के मन में लोभ आ गया, कपट छा गया। मन ही मन कहने लगे, 'यह कंगन तो मेरी बेटी के लायक था। रैदास की चमारिन इसका क्या करेगी?' आखिर ब्रह्मा ने ठान लिया कि कंगन रैदास को नहीं दूंगा? रास्ते में रैदास का घर पड़ता था। ब्रह्मा उस रास्ते से नहीं लौटे। हुआ क्या कि जिस रास्ते से भी ब्रह्मा जाते, उसी पर उनको रैदास दिखाई देते और वह यही कहते सुनाई देते, 'ब्रह्माजी, गंगामाई ने मुझे भेंट दी होगी। वह कहाँ है?

ब्रह्मा ने तब कंगन उनकी ओर फेंक दिया और बिना कुछ कहे चलने लगे। रैदास चिल्लाए, 'सुनो ब्रह्मा, गंगामाई ने कुछ कहा तो नहीं?' ब्रह्मा चिढ़े। छोटे मुँह बड़ी बात करता है। गंगामाई क्या इसको कहती कि तेरे घर आऊंगी। व्यंग्य में उन्होंने रैदास को चिढ़ाने के लिए यों ही कह दिया, 'क्यों नही! गंगामाई ने कहा है कि तेरे घर आऊंगी।'

'घर आने को कहा है!' रैदास खुश हो गए। ब्रह्मा हँसे कि छोटी जात कितनी हल्की होती है। वह चाहता है उसके साथ गंगामाई भी अपवित्र हो जाए।

ब्रह्मा घर चले गए। रैदास ने पत्नी से कहा, 'मेरे घर गंगामाई आएंगी।' पत्नी ने गोबर से घर लीप–पोत कर गोमूत्र छिड़का और दीप जलाया। शाम हुई, किसी को क्या खबर थी सचमुच गंगामाई रैदास के घर आईं रैदास ने माथा नवाजा। भक्त की भावना जो ठहरी। गंगामाई ने उन्हें निराश नहीं किया; ऊँच–नीच नहीं देखा। रैदास ने जी भरकर गंगामाई का स्वागत किया।

ब्रह्मा अचरज में पड़ गए। देवतागण देखते रह गए।

*****

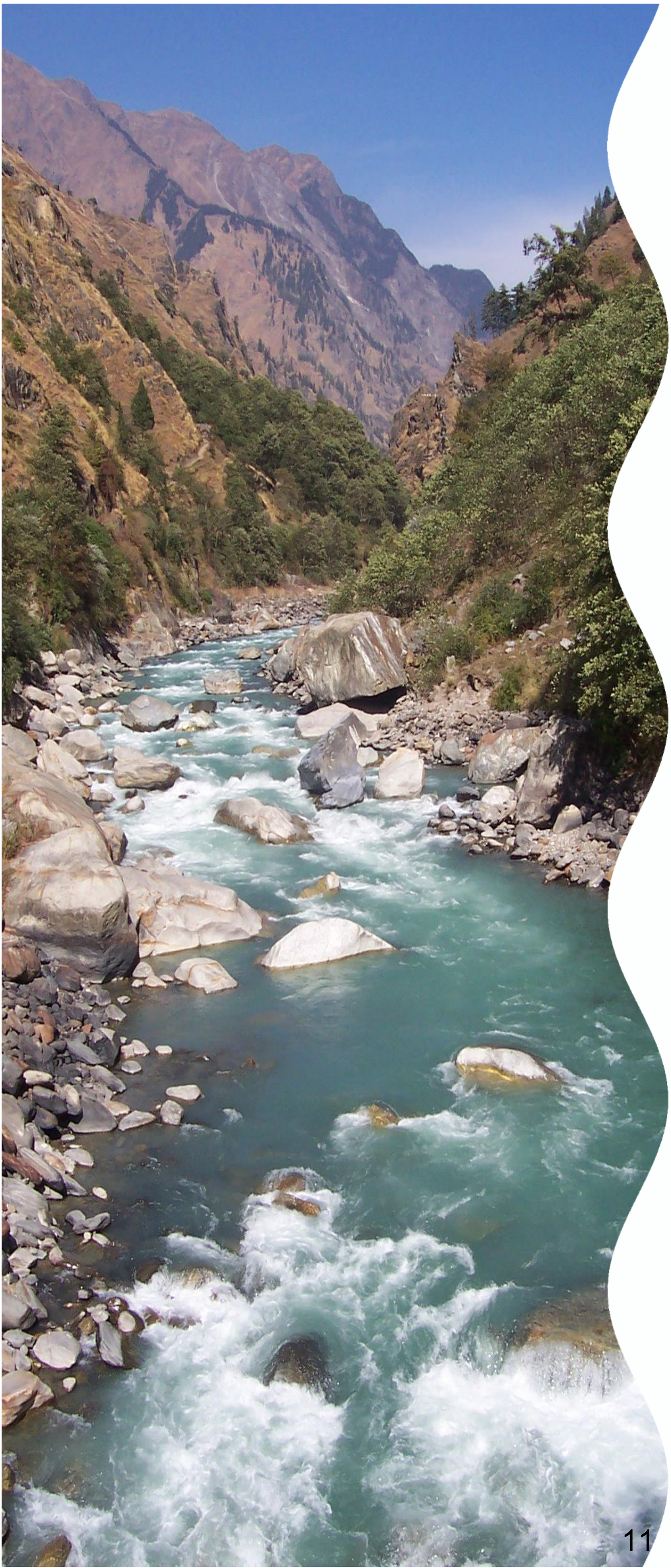

पर्यावरण की दृष्टि के साथ–साथ गंगा का सामाजिक महत्व भी बहुत है। इसमें एक ओर जहाँ अनेक जीव–जन्तु शरण लिए हुए हैं, वहीं अनेक शहर इसके किनारे बसे हुए हैं और खेती के साथ–साथ गंगा नदी अपने तट पर बसे शहरों की जलापूर्ति भी करती है। इसके तट पर विकसित धार्मिक तीर्थस्थल भारतीय सामाजिक व्यवस्था के विशेष अंग हैं। समय, संस्कृति और सभ्यता के विकास के साथ–साथ गंगा का महात्मय निरंतर बढ़ता रहा है। इसके जल के बिना कोई धार्मिक संस्कार या कर्मकांड पूरा नहीं होता। गंगा अपने उद्‌गम से लेकर गंगा सागर तक की अपनी पूरी यात्रा में अपने प्रवाह मार्ग में अनेकों पेड़ पौधे, औषधीय जड़ी बूटियों, खनिज लवणों के गुणों को साथ लेकर चलती है जिसके कारण इसके जल की महत्ता और अधिक बढ़ जाती है। गंगा एक सम्पूर्ण संस्कृति की वाहक है। गंगा के तट पर होने वाले मेले स्नान व पर्व इसकी जीवटता के प्रतीक हैं। विश्व प्रसिद्ध कुम्भ मेला 12 वर्ष के अंतराल में गंगा के तट पर स्थित हरिद्वार तथा प्रयागराज में आयोजित होता है। गंगा ने हिमालय से लेकर गंगा सागर तक अनेकों आर्थिक पहलुओं से मनुष्य को बांधे रखा है। गंगा नदी भारत एवं बांग्लादेश के कृषि आधारित अर्थ में सहयोग तो करती ही है साथ ही अपनी सहायक नदियों के साथ एक बड़े क्षेत्र के लिए सिंचाई का बारहमासा स्रोत भी है। गंगा नदी की प्रणाली भारत की सबसे बड़ी नदी प्रणाली है। गंगा का महत्व पर्यटन पर आधारित आय के कारण भी है। इसके ऊपर बने पुल, बाँध और नदी परियोजनाएँ भारत की बिजली, पानी और कृषि से संबंधित जरूरतों को पूरा करती हैं। 2008 में भारत सरकार द्वारा इसे भारत की राष्ट्रीय नदी तथा इलाहाबाद और हल्दिया के बीच (1600 किलोमीटर) गंगा नदी जलमार्ग को राष्ट्रीय जलमार्ग घोषित किया गया है।

तुम सबके घरों में गंगाजल तो जरूर होगा। किसी बोतल के अंदर कई समय से बंद। जब तुम ढक्कन खोलते हो तो क्या कोई बदबू आती है या फिर बोतल में कीड़े तैरते दिखाई देते हैं, शायद नहीं। क्यों? नल के पानी को इस तरह रखते तो शायद बदबू आ जाती। है ना अचम्भे की बात।

वजह है :

जब मैं गोमुख से चलती हूँ तो रास्ते में हिमालय पर्वत की जड़ी–बूटी के औषधीय गुण भी मेरे जल में समाहित होते जाते हैं। फिर रास्ते में मैं पर्वतों से टकराती हुई उनके खनिज पदार्थ और लवणों का भी स्पर्श करती हूँ और मेरा जल उनके गुण भी अपने में समाहित कर लेता है। इस तरह मेरा जल औषधीय गुण युक्त हो जाता है।

दूसरा कारण है कि मेरे जल में गंधक (सल्फर) की मात्रा अधिक पाई गई है। यह भी एक कारण है कि मेरा जल खराब नहीं होता है। इसी कारण गंगाजल में स्नान करने से रोग मुक्त होते हैं।

तीसरा सबसे महत्वपूर्ण कारण है कि मेरे जल में असंख्य वायरस हैं जिनकी वजह से मेरा जल इतना निर्मल और शुद्ध है। इन वायरस महाशय की वजह से मेरा पानी सड़ता नहीं है। इस विषय पर मैं तुम्हें विस्तार से बताऊंगी आगे वैज्ञानिक विश्लेषण में।

हमारे ऋषियों और वेदाचार्यों का कहना क्या है? यह भी जान लेते हैं। हिमालय की गुफाओं में और पहाड़ों में जहाँ से मैं आती हूँ वहाँ न जाने कितने तपस्वी कब से तपस्या कर रहे हैं और लगातार मंत्रों का उच्चारण कर रहे हैं। जानते हो हमारे मंत्रों में बहुत शक्ति है यानि वैज्ञानिक भाषा में कहूं तो ऊर्जा है। उनके लगातार उच्चारण से आस–पास एक दिव्य ऊर्जा उत्पन्न हो जाती है। मेरे जल ने करोड़ों सालों से उस ऊर्जा को अपने जल में आत्मसात कर लिया है। कहते हैं इन मंत्रों की शक्ति से गंगा में स्पंदन है और मेरा जल अभिमंत्रित हो गया है। इन मंत्रों की शक्ति ने मेरे जल को पवित्र और पूजनीय बना दिया है। क्यों, अब तो मानते हो मैं अमृत तुल्य हूँ।

सुन्दरवन डेल्टा

गंगा और ब्रह्मपुत्र द्वारा बनाया गया डेल्टा विश्व का सबसे बड़ा डेल्टा माना जाता है। यह डेल्टा दो अन्य नदियों हुगली और मेघना के बीच है। इस डेल्टा का जो समुद्री भाग है वह घने वनों से ढका हुआ है। यहाँ सुन्दरी नाम के वृक्ष बहुत हैं इसलिए यह सुन्दर वन कहलाता है इन्हें मैंग्रोव वन भी कहते हैं।

यह मैंग्रोव बहुत काम की चीज हैं। यह बहुत बड़ी मात्रा में पौधों और जीव–जन्तुओं की प्रजातियों का पनाहगाह है। इनमें क्षार (लवण) सहन करने की बहुत क्षमता होती है। यह समुद्री तूफानों की तीव्रता को कम करने के साथ समुद्र के जल की उर्वरता को बढ़ाते हैं। हमें आश्चर्य होता है कि मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने की बात तो सुनी है पर समुद्र के जल की उर्वरता बढ़ाना? ये बात कुछ समझ नहीं आती। तो याद दिला दें कि जैसा कि पहले भी कहा था कि गंगा अकेली नही है। गंगा के अंदर उसका भरा–पूरा परिवार है। उनकी सेहत व सुरक्षा के लिए उसके जल की उर्वरता तो बनती है ना? इसमें मदद करती हैं मैंग्रोव वनस्पतियां।

यूनेस्को ने सुन्दरवन को प्राकृतिक वर्ल्ड हैरिटेज साइट में सम्मिलित किया है।

गंगा की जैवविविधता

गंगा नदी का दर्जा केवल अपने आस पास रहने वाले लोगों की दृष्टि में ही माँ का नहीं, वरन् अनेक जीव–जन्तुओं के लिए भी गंगा एक माँ ही है क्योंकि इसमें अनेक जीव–जन्तु शरण लिए हुए हैं, पल रहे हैं। गंगा नदी में डॉल्फिन, जिसे आम बोलचाल की भाषा में सूंस कहते हैं, पाई जाती है, जो कि स्वच्छ पानी एवं स्वस्थ पारिस्थितिकीय तंत्र की द्योतक है। इसकी वजह से भी गंगा को लेकर विश्व के वैज्ञानिकों की काफी रूचि है। ऐतिहासिक साक्ष्यों से ज्ञात होता है कि 16वीं तथा 17वीं शताब्दी तक गंगा–यमुना प्रदेश घने वनों से ढका हुआ था। इन वनों में जंगली हाथी, भैंस, गेंडा, शेर, बाघ तथा गवल का शिकार होता था। गंगा का तटवर्ती क्षेत्र अपने शांत व अनुकूल पर्यावरण के कारण रंग–बिरंगे पक्षियों का संसार अपने आंचल में संजोए हुए है। इसमें मछलियों की 143 प्रजातियाँ, गंगा में डॉल्फिन की एक प्रजाति, ऊद्‌बिलाव की तीन प्रजातियाँ, गंभीर रूप से लुप्तप्राय मगरमच्छ की तीन प्रजातियाँ, कछुए की 13 प्रजातियाँ, गंभीर रूप से लुप्तप्राय बाटागुर कछुगा, मछलियों की अनेक प्रजातियाँ के साथ ही केकड़ों की भी अनेकों प्रजातियाँ पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त जलीय पक्षियों की अनेकों प्रजातियों के साथ, गंगा बेसिन में प्रवास एवं प्रजनन हेतु आने वाले प्रवासी पक्षी भी शामिल हैं। यहाँ की उत्कृष्ट पारिस्थितिकी संरचना में कई प्रजाति के वन्य जीवों जैसे नीलगाय, सांभर, खरगोश, नेवला, चिंकारा के साथ सरीसृप–वर्ग के जीव–जन्तुओं को भी आश्रय मिला हुआ है। गंगा के तटीय क्षेत्रों में ऐसे कई जीव–जन्तुओं की प्रजातियाँ हैं जो दुर्लभ होने के कारण संरक्षित घोषित की जा चुकी हैं। गंगा के पर्वतीय किनारों पर लंगूर, लाल बंदर, भूरे भालू, लोमड़ी, चीते, बर्फीले चीते, हिरण, काकड़, सांभर, कस्तूरी मृग, सेरो, बरड़ मृग, साही, तहर आदि काफी संख्या में मिलते हैं। विभिन्न रंगों की तितलियाँ तथा कीट भी यहाँ पाए जाते हैं। बढ़ती हुई जनसंख्या के दबाव में धीरे–धीरे वनों का लोप होने लगा है। गंगा की घाटी में सर्वत्र कृषि होती है। गंगा के मैदानी भाग में हिरण, जंगली सूअर, जंगली बिल्लियाँ, भेड़िया, गीदड़, लोमड़ी की अनेक प्रजातियाँ पाई जाती हैं। गंगा और बंगाल की खाड़ी के मिलन स्थल पर बनने वाले मुहाने को सुंदरवन के नाम से जाना जाता है जो विश्व की बहुत–सी प्रसिद्ध वनस्पतियों और प्रसिद्ध बंगाल टाइगर का गृहक्षेत्र है।

कूर्मावतार (कछुआ)

भगवान विष्णु के ग्यारह अवतारों में से दूसरा अवतार कूर्मावतार है। पुराणों के अनुसार कूर्मावतार के रूप में भगवान विष्णु ने क्षीर सागर के समुद्र मंथन के समय मंदार पर्वत को अपनी पीठ (कवच) पर धारण कर लिया था। पद्मपुराण के अनुसार इंद्र ने दुर्वासा द्वारा प्रदत्त पारिजात माला का अपमान किया तो दुर्वासा के श्राप के अनुसार इंद्र का वैभव नष्ट हो गया परिणामस्वरूप लक्ष्मी समुद्र में विलुप्त हो गई। तब भगवान विष्णु ने लक्ष्मी को पुनः प्राप्त करने के लिए वासुकी नाग की डोर तथा मंदराचल पर्वत की मथनी बनाकर समुद्र मंथन करवाया। मंथन करते समय जब मंदराचल पर्वत रसातल में जाने लगा तो विष्णु ने कछुए का रूप धारण किया और मंदार पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया। देवताओं तथा दानवों ने समुद्र मंथन से अमृत एवं लक्ष्मी सहित चौदह रत्नों की प्राप्ति की। पुराणों में कुर्मावतार का सम्बंध प्रजापति ब्रह्मा के साथ भी वर्णित किया गया। पौराणिक चित्रों में कछुए की प्रजातियों को गंगा एवं यमुना के प्रतीकात्मक रूप में दर्शाया गया है।

एक जातक कथा के अनुसार कस्सप बुद्ध पाली परम्परा में पारिगणित चौबीसवें बुद्ध थे। जो कि अपने पूर्व जन्म में एक कछुए के रूप में रहे और जिन्होंने अपने जीवनपर्यंत संवेदनशील वस्तुओं को बचाये रखने का संकल्प लिया।

गंगा नदी के कछुए

भारत में पाए जाने वाली कछुओं की कुल 26 प्रजातियों में से 13 प्रजातियां गंगा नदी में पाई जाती हैं। यह कछुए भारतीय वन्यजीव संरक्षण अधिनियम 1972 में सूचीबद्ध हैं। गंगा नदी इन कछुओं का सबसे महत्वपूर्ण वास स्थल है। इसके अतिरिक्त चंबल, यमुना, केन, बेतवा, घाघरा, गिरवा और रामगंगा विभिन्न प्रजातियों के कछुओं के निवास के लिए उत्तम स्थान है। कछुए जल तंत्र के गिद्ध होते हैं। ये कछुए मृत जीव एवं रोग ग्रस्त मछलियों का सेवन करके जलीय पर्यावरण को स्वस्थ रखते हैं। कछुओं की आबादी में कमी के मुख्य कारण इनके निवास स्थान को नुकसान, अंडो का दोहन, नदी तट में खेती और रेत खनन, अत्यधिक शिकार और प्रदूषित जल है।

लाल सिर कछुआ

(बटागुर कचुगा)

यह कठोर आवरण वाला कछुआ गंगा नदी के ऊपर, मध्य और निचले हिस्सों में पाया जाता है। इसके पैर अनुप्रस्थ चौड़े होते हैं, इसके पैरों का शल्क भूरा और पीले रंग का होता है। सिर के ऊपरी हिस्सों में लाल धारियां होती हैं। नर, मादा के आधे आकार का होता है। यह स्वच्छ जल की गहरी नदी में रहते हैं और नदी किनारे रेतीले तट एवं टापुओं पर अण्डे देते हैं। यह जलीय पौधों पर निर्भर रहते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जल स्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

चपन्त कछुए

(पंगशुरा स्मीदीआई)

यह गंगा के ऊपरी और मध्य हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इसकी पीठ भूरे और पीले रंग की होती है। यह सर्वाहारी होते हैं, एवं जलीय वनस्पति तथा मछलियों को खाते हैं। यह बड़ी नदियों में जहाँ जलीय पौधों की संख्या अधिक है वहाँ पाये जाते हैं। निवास स्थानों का नुकसान, अवैध शिकार एवं व्यापार इनके मुख्य खतरे हैं।

भारतीय काले कछुए
(मेलानोचेलिस ट्राइजुगा)

यह गंगा के ऊपरी और मध्य हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इसकी पीठ लंबी और काले रंग की होती है। इसका पेट काला जिसमें पीले रंग की धारियां होती हैं। यह ज्यादातर झील, तालाब और नदियों में पाये जाते हैं। यह जलीय कीड़े–मकोड़े, सड़े–गले मांस एवं जलीय वनस्पतियों को खाते हैं। झील और तालाबों से खेती के लिए पानी निकाल लेना इसका मुख्य खतरा है।

पचौरिया
(पंगशुरा टेन्टोरिया)

यह गंगा के ऊपरी, मध्य एवं निचले हिस्सों में पाए जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इसके भूरे रंग के सिर में, आंखों के पीछे एक लाल रंग का धब्बा होता है। इसकी पीठ भूरे रंग की होती है, और पीले रंग के पीठ में काले धब्बे होते हैं। यह नदी, झील और तालाबों में पाये जाते हैं। मुख्य रूप से ये शाकाहारी होते हैं। निवास स्थान का विनाश, नदी के जल स्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार एवं व्यापार और रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

सुन्दरी
(लिसीमीस पंगटाटा)

यह गंगा नदी के ऊपरी, मध्य एवं निचले क्षेत्र में पाये जाने वाले नरम आवरण के कछुए हैं। इसकी पीठ जैतूनी रंग की एवं उसमें छोटे पीले धब्बे होते हैं। इसका पेट हल्का पीले रंग का होता है। पीछे के पैर एक आवरण (फ्लैप) द्वारा पूरा ढक जाता है। यह नदी के तट, जलाशयों, दलदल, तालाबों, झीलों, नहरों, धान के खेतों और नदियों की धाराओं में रहता है। यह मेंढ़क, टैडपोल, मछली, केंचुआ, जलीय कीड़े–मकोड़े, सड़े–गले मांस एवं जलीय पौधों को खाता है। निवास स्थान का विनाश, नदी के जल स्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार व व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

तिलहारा कछुआ

(पंगशुरा टेक्टा)

ये गंगा के ऊपरी, मध्य एवं निचले हिस्सों में पाये जाने वाले कठोर आवरण के कछुए हैं। इसकी पीठ उठी हुई होती है जिसके किनारे पीले रंग के होते हैं। इसकी तीसरी कशेरूका पर नुकीली कशेरूकीय कील होती है। यह नदियों में पाये जाते हैं। इनका भोजन मेंढ़क, टैडपोल, मछली, केंचुआ, केकड़ा, जलीय कीड़े–मकोड़े तथा वनस्पतियाँ हैं। निवास स्थान का विनाश, नदी के जल स्तर में परिवर्तन, अवैध शिकार व व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

चित्रा

(चित्रा इन्डिका)

यह नरम आवरण वाले नदी के कछुए हैं। इनकी गर्दन के ऊपरी हिस्सों से पीठ के निचले हिस्से तक एक ''वी'' आकार का निशान रहता है। ये मध्य भारत में मानसून के समय प्रजनन करते हैं, एवं बाकी स्थानों में शुष्क मौसम में प्रजनन करते हैं। यह रेतीले नदी तट और टापुओं में एक साथ 65 से 193 अंडे देते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जल स्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

ढोन्ड

(बटागुर ढोंगोका)

यह कठोर आवरण वाला कछुआ गंगा नदी के मध्य और ऊपरी हिस्सों में पाया जाता है। इसकी पीठ भूरे रंग, अंडाकार एवं उभरी हुई होती हैं। जिसमें तीन काले रंग की धारियाँ होती हैं। यह मार्च से अप्रैल महीने में रेतीले नदी तट और टापुओं में अंडे देते हैं। यह सर्वाहारी होता है। उनके निवास स्थल में परिवर्तन, नदी के जल स्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

काला चित्तीदार कछुआ

(जियोक्लेमिस हेमिल्टोनियाई)

ये कठोर आवरण वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी और मध्य तथा निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। यह काले रंग के होते हैं। इनके आवरण में पीले रंग का धब्बा और धारियाँ होती हैं। यह नदी, झील और तालाबो में पाये जाते हैं। यह मांसाहारी होते हैं, मुख्यतः घोघों और जलीय कीड़ों पर निर्भर रहते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जल स्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

साल

(हारडेला थूरजी)

ये कठोर आवरण वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। इसकी पीठ (केरापेस) गहरे भूरे रंग की व गुंबद जैसी होती है। इसका पेट पीला होता है, जिसमें बड़े काले धब्बे होते हैं। इसके सिर पर चार पीले और नारंगी रंग की धारियाँ होती हैं। यह तालाबों, जलाशयों, तालों, नहरों, धीमी प्रवाह वाली नदियों में रहते हैं। यह सदैव पानी में रहते हैं। पानी की घास और पौधे इनका मुख्य भोजन हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जल स्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

पचेरा

(निलसोनिया गेंजेटिका)

यह नरम आवरण के कछुए गंगा नदी के मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। यह कीचड़, मिट्टी और रेतीली सतह वाली गहरी नदी, झीलों और तालाबों में पाये जाते हैं। ये सर्वभक्षी होते हैं एवं मछली, मेंढ़क, पानी के पक्षी, घोंघा एवं जलीय कीड़े–मकोड़े एवं जलीय पौधा खाते हैं। इसके साथ–साथ ये सड़ा हुआ मांस खाकर नदियों को प्रदूषण मुक्त रखते हैं। वास स्थल में परिवर्तन, नदी के जल स्तर में बदलाव, अवैध शिकार इनके लिए मुख्य खतरे हैं।

धुम कछुआ

(*निलसोनिया हुरम*)

ये नरम आवरण वाले कछुए गंगा नदी के ऊपरी, मध्य और निचले हिस्सों में पाये जाते हैं। इसका सिर बड़ा, पीठ (केरापेस) अंडाकार और जैतूनी रंग की होती हैं। यह कछुआ कीचड़, मिट्‌टी और रेतीले सतह वाले गहरी नदी, झील और तालाबों में पाये जाते हैं। यह सर्वाहारी होते हैं। ये मछली, मेंढ़क,घोंघा, झींगा, और जलीय पौधे खाते हैं। इसके साथ–साथ ये सड़ा हुआ मांस खाकर नदी को प्रदूषण मुक्त रखते हैं निवास स्थान का विनाश, नदी के जल स्तर में परिवर्तन, शिकार, अवैध व्यापार एवं रेत खनन इनके मुख्य खतरे हैं।

काला काठ कछुआ

(*बटागुर बास्का*)

यह प्रजाति मुख्यतः सुन्दरवन में पायी जाती है, इसकी पीठ भूरी या काली एवं पेट (प्लेस्टौन) पीले से सफेद रंग का होता है। यह समुद्रतटीय मैनग्रूव जंगलों के खारे पानी में पाये जाते हैं, ये ज्यादातर मैनग्रूव के पत्ते एवं फल खाते हैं। मादाएं दिसम्बर से मार्च में अंडे देती हैं। निवास स्थान का विनाश, अवैध शिकार व व्यापार इनके मुख्य खतरे हैं।

नरौरा, बुलन्दशहर – भारतीय वन्यजीव संस्थान एवं नरौरा परमाणु विद्युत केन्द्र (**NAPS**) के साझा प्रयास से **जैवविविधता एवं गंगा संरक्षण** कार्यक्रम के 6 घटकों में से चौथे घटक के अंतर्गत बचाव एवं पुनर्वास केंद्र की स्थापना की गई। भारतीय वन्यजीव संस्थान तथा **NAPS** की साझेदारी में गंगा के जलीय जीवों के संरक्षण एवं पुनर्वास के लिए न्युक्लियर पॉवर कॉरपोरेशन ऑफ इण्डिया लिमिटेड (**NPCIL**) के साथ एक साझा समझौता पत्र बना है। ये पुनर्वास एवं बचाव केंद्र पारिस्थितिकी तंत्र और अनुकूल प्रबंधन का अपने आप में एक अनूठा उदाहरण है जो कि पूरे देश में कहीं और प्रयोग में नहीं लाया गया है।

पुनर्वास एवं बचाव केंद

नरौरा, बुलन्दशहर

पुनर्वास एवं बचाव केंद

सारनाथ, वाराणसी

सारनाथ, वाराणसी – 1986 में सारनाथ, वाराणसी में उत्तर प्रदेश वन विभाग के द्वारा स्थापित हुए प्रजनन केन्द्र का परियोजना के तहत भारतीय वन्यजीव संस्थान एवं उत्तर प्रदेश वन विभाग द्वारा साझेदारी में नवीनीकरण किया गया। यहाँ पर तीन बड़े तालाबों का नवीनीकरण किया गया है जिनमें कछुओं के प्रजनन के अतिरिक्त, तस्करी में पकड़े गये कछुओं को भी रखा जाता है। इन कछुओं को बाद में उनके प्राकृतिक आवासों में छोड़ दिया जाता है। यदि कहीं किसी कछुए के घायल अवस्था में पाये जाने की सूचना प्राप्त होती है तो उसे बचाव केंद्र तक लाया जाता है तथा इलाज के बाद उन्हें गंगा में छोड़ दिया जाता है। घायलावस्था में या अन्य कहीं पाये गये कछुओं के बचाव कार्य में स्थानीय गंगा प्रहरियों द्वारा सक्रियता से भागीदारी की जाती है।

गंगा नदी की जैवविविधता, पानी की उपलब्धता में कमी, घटते आवास क्षेत्र, प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के अत्यधिक दोहन के कारण संकट में है। गंगा नदी की पारिस्थितिकी के संरक्षण के लिए और स्थानीय समुदाय की गंगा पर प्रत्यक्ष निर्भरता को कम करने के लिए तथा गंगा संरक्षण में उनकी भागीदारी बढ़ाने के लिए, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन एवं भारतीय वन्यजीव संस्थान (NMCG-WII) द्वारा संचालित ''जैवविविधता और गंगा संरक्षण'' कार्यक्रम के अंर्तगत स्थानीय समुदाय के सदस्यों को गंगा नदी के संरक्षक के रुप में शामिल किया गया है, जिन्हें गंगा प्रहरी का नाम दिया है।

गंगा प्रहरी की पहचान व चयन की प्रक्रिया

गंगा के किनारे स्थित पांचो राज्यों (उत्तराखण्ड, उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल) के चयनित गांवों में सम्पर्क, बैठक, कार्यशाला/प्रशिक्षण के माध्यम से गंगा प्रहरियों की पहचान की गई। ऐसे लोगों को चयनित किया गया और किया जा रहा है जो गंगा के संरक्षण के लिये इच्छुक हों और इस हेतु अन्य लोगों को प्रेरित कर सकें।

गंगा प्रहरियों के चयन के लिये स्थानीय समुदाय, संबन्धित विभाग, शैक्षिक संस्थान ,राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन0सी0सी), राष्ट्रीय सेवा योजना (एन0एस0एस), महिला मंगल दल, युवा मंगल दल, नेहरु युवा केन्द्र संगठन और गंगा विचार मंच जैसे अन्य संगठनों से भी सम्पर्क किया गया। गंगा किनारे स्थित सभी गांवों व जिलों से प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने हेतु संभावित युवाओं से व्यक्तिगत चर्चा की गई। इनके चयन का मुख्य आधार गंगा नदी के प्रति आत्मीयता, उसकी जैव विविधता के संरक्षण एवं स्वच्छता के प्रति उत्साह का होना है। उन गंगा प्रहरियों को प्राथमिकता दी गई जो कि गंगा के किनारे बसे गांवो से संबन्धित हों व उनकी आयु 18 वर्ष से अधिक हो। बाल गंगा प्रहरी के रूप में भी विद्यालयों के छात्र–छात्राओं को भी शामिल करने की प्रक्रिया की जा रही है।

गंगा प्रहरी के उत्तरदायित्व –

1–एक स्वच्छ जीवंत गंगा और गंगा नदी से मिलने वाले लाभों के प्रति समुदाय को जागरुक करना।

2–गंगा नदी के प्रति उनमें अपनत्व की भावना विकसित करना।

3–स्थानीय समुदायों एवं उनकी आजीविका के सतत् विकास के लिये विभिन्न संस्थानों से जुड़ाव करना।

4–स्वच्छ गंगा हेतु कार्य कर रही विभिन्न संस्थाओं द्वारा चलाई गई परियोजनाओं में समुदाय की भागीदारी बढ़ाना और समन्वय बिंदु (convergence point) स्थापित करना।

5–स्थानीय समुदायों की आजीविका और हितों को स्वच्छ और जीवंत गंगा के साथ जोड़कर सतत विकास को बढ़ावा देना।

6–स्थानीय स्कूलों में जाकर बाल गंगा प्रहरियों का चयन करना।

गंगा प्रहरी कैडर का ढांचा

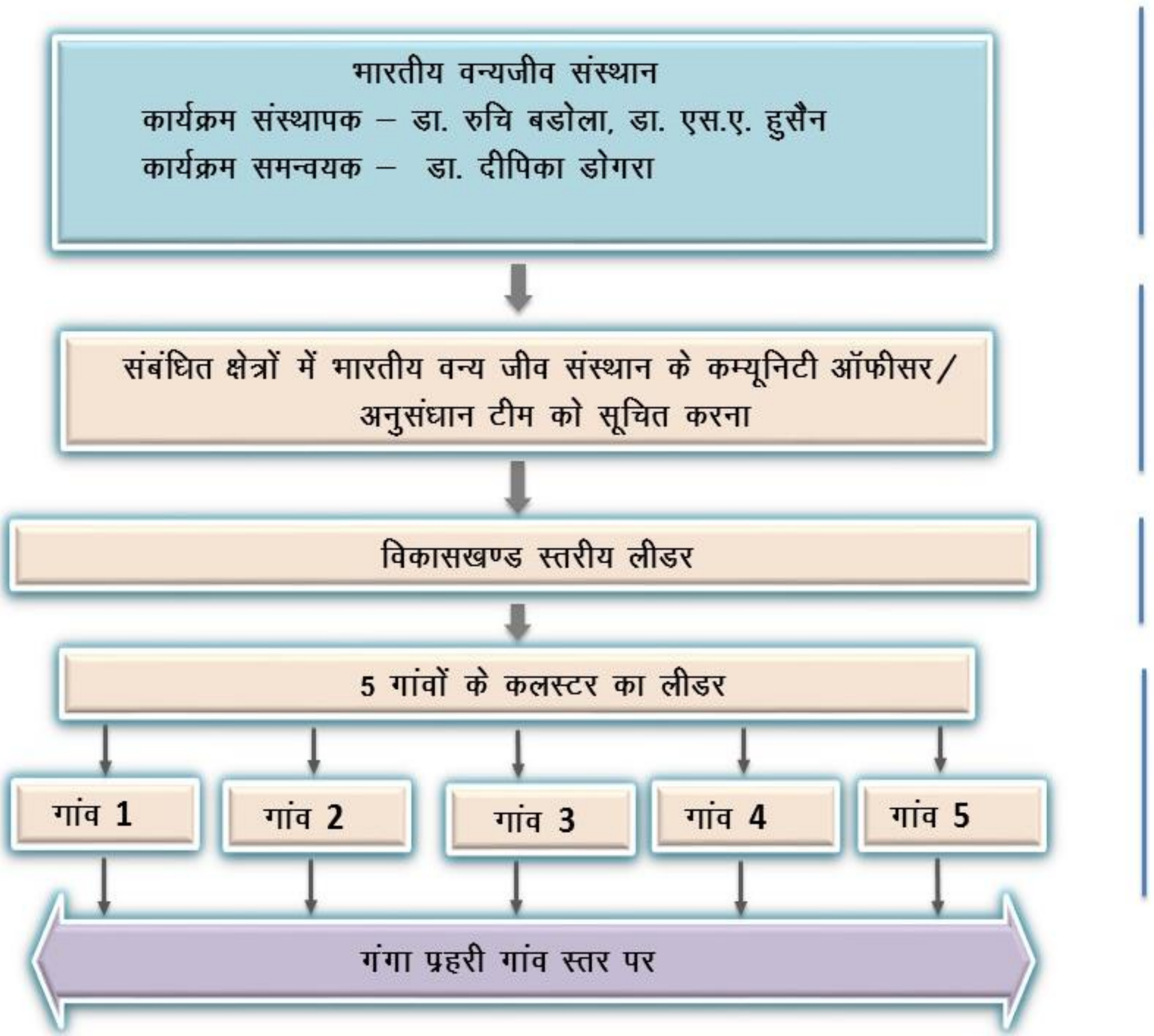

गंगा के किनारे स्थित पांचो राज्यों के चयनित समस्त गांवों में से प्रत्येक राज्य के पांच गांवों के बीच एक 'क्लस्टर' बनाया जायेगा। प्रत्येक कलस्टर में एक लीडर होगा जिसका चयन भारतीय वन्यजीव संस्थान के द्वारा अन्य गंगा प्रहरियों के साथ परामर्श के पश्चात किया जायेगा। ब्लाक लीडर अपने विकासखंड के सभी कलस्टर को संचालित करेगा। कलस्टर लीडर व ब्लाक लीडर का चयन क्रमिक रूप से दो माह हेतु किया जायेगा। प्रत्येक कलस्टर लीडर संबंधित गांवों में प्रतिमाह 10 गतिविधियों का आयोजन करेगा। जिसके लिये **NMCG-WII** कार्यक्रम से आवश्यक सहयोग किया जायेगा। ब्लाक लीडर अपने कार्यक्षेत्र में किये गये कार्यों की रिपोर्ट प्रतिमाह कम्यूनिटी आफिसर/अनुसंधान टीम सदस्य के माध्यम से **NMCG-WII** टीम को भेजेंगे। कलस्टर लीडर के कार्यों का मूल्यांकन क्षेत्र में उनके प्रर्दशन के आधार पर किया जायेगा और सबसे सक्रिय गंगा प्रहरी को प्रोत्साहन स्वरूप पुरूस्कृत किया जायेगा।

भारती कुमारी

भागलपुर, बिहार

गंगा प्रहरी के लिये आयोजित कार्यशालाओं एवं बैठकों में शामिल होने के बाद जब पिताजी उत्साहित हो गंगा की स्वच्छता एवं जलीय जीवों के संरक्षण के बारे में बात करते थे एवं स्वयं भी उसके लिये काम करने को तैयार रहते थे तो उनकी बातें सुनकर और उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों को देखकर, मेरा भी गंगा के प्रति दृष्टिकोण बदल गया। अपने पिता के गंगा के प्रति प्रेम को देखकर मुझे भी गंगा मैया के लिये कार्य करने की प्रेरणा मिली। मैं भी इस गंगा प्रहरी अभियान से जुड़ गई। इस कार्यक्रम से प्रेरित होकर मैं हर वक्त गंगा की जैवविविधता के बारे में पढ़ती रहती हूँ तथा अपने साथियों के साथ मिलकर गंगा के जलीय जीवों के संरक्षण के बारे में बात करती रहती हूँ। मैंने और मेरी सहेलियों ने अब गंगा में साबुन से नहाना और कपड़े धोना बंद कर दिया है। गाँव में अन्य लोगों को भी गंगा में साबुन से न नहाने तथा कपड़े न धोने के लिए प्रेरित करती हूँ। मैं जानती हूँ कि नहाते समय साबुन का प्रयोग करने से जलीय–जीवों को हानि होती है। अपने गाँव को कूड़ा निस्तारण के लिए कम्पोस्ट पिट बनाने के लिए प्रेरित करती हूँ।

अरविंद जियाल

टिहरी गढ़वाल, उत्तराखण्ड

"गंगा प्रहरी बनना हमारे जीवन का विशिष्ट अनुभव रहा है। पर्यावरण संरक्षण के लिए हमेशा जल व वनों को बचाने की बात सुनी व जानी थी, पर कभी जलीय जीवों के बारे में न सुना और न ही इनके महत्व के बारे में जाना। गंगा प्रहरी बनने के बाद हमारी गंगा पर निर्भरता और गंगा में रहने वाले प्राणियों के महत्व को जान पाये और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से जागरूक हो पाये। पुरानी रूढ़िवादी परंपरायें जैसे कि धार्मिक अवसरों पर फूल, हवन सामग्री का प्रयोग इत्यादि, दाह संस्कार के बाद अधजला शव गंगाजी में डालने पर उसके क्या दुष्प्रभाव हैं, हम गंगा प्रहरियों द्वारा इस विषय में लोगों को जागरूक कर उनमें जागृति लाई गई। गंगा के किनारे बसे गांव के लोगों की नदी पर निर्भरता एवं गंगा नदी का हितधारकों के लिये क्या मायने हैं, उसकी जानकारी हमें कार्यक्रम से जुड़ने के पश्चात् प्राप्त हुई। भारतीय अर्थव्यवस्था में गंगा नदी की अहम भूमिका के विषय मे हमने जाना और गंगा प्रहरी बनने के बाद गंगा जैव विविधता पदयात्रा के दौरान तरह–तरह के जीव जंतुओं, पक्षियों के वैज्ञानिक नाम और उनके बारे में ज्ञान मिला। आज गंगा व जलीय जीवों के संरक्षण हेतु काम करके बहुत खुशी मिलती है। इस कार्य में हमारे साथ और भी लोग जुड़ रहे हैं। हमें युवाओं की एक बड़ी फौज गंगा को बचाने के लिए तैयार करनी है, तभी मेरा गंगा प्रहरी बनना सार्थक होगा। परियोजना न होने पर भी मैं हमेशा प्रहरी बनकर गंगा की जैव विविधता को बचाने का कार्य करता रहूँगा।

अजीजुर रहमान

साहिबगंज, झारखण्ड

मेरी सबसे अधिक रूचि वन्य जीवों के संरक्षण में है। उसी रूचि से प्रेरणा लेकर में गंगा प्रहरी बना। भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की कार्यशाला (ऋषिकेश) में भाग लेने के बाद मुझे गंगा के संरक्षण, संवर्द्धन और जैवविविधता के संरक्षण के बारे में जानकारी मिली। गंगा प्रहरी के रूप में अपनी रूचि और सक्रिय भागीदारी के कारण वन विभाग ने मुझे वृक्षारोपण में भाग लेने का मौका दिया। इस से प्रेरित होकर मैंने गंगा की जैवविविधता के संरक्षण तथा संवर्द्धन हेतु अपने गाँव के युवाओं के समूह बनाये है। अपनी प्रिय नदी गंगा को बचाने के लिए हम सब हमेशा कार्य करते रहेंगे। क्योंकि गंगा है तो हमारा अस्तित्व भी है। हमें भारतीय वन्य जीव संस्थान द्वारा गंगा की जैवविविधता को समझने और संरक्षण के तरीके जानने के लिए बहुत सारे प्रशिक्षणों की आवश्यकता है।

पवन कुमार कटियार

फररूखाबाद, उत्तरप्रदेश

बहुत उत्सुकता थी मन में कि हम गंगा प्रहरी बनने जा रहे हैं। क्या–क्या करना होगा, कुछ नया सीखने और करने को मिलेगा और जैसा हमने सोचा था उससे भी अच्छा अनुभव मुझे ऋषिकेश में आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण में मिला। वहाँ समझ में आ गया कि क्या करना है, कैसे करना है? हम माँ गंगा को निर्मल और अविरल बनाने में अपना योगदान दे सकते हैं। गंगा प्रहरी बनने से अब तक का अनुभव बहुत अच्छा रहा। आगे आने वाले समय में, मैं और भी अच्छा कार्य करने का प्रयास करूंगा। मैं गंगा मैया के लिये जितना करूंगा उतना कम होगा और मैं भारतीय वन्य जीव संस्थान, देहरादून का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होंने हमको ये अवसर प्रदान किया। मैंने तय किया है कि मेरे परिवार और सभी नाते–रिश्तेदार जब भी मछली पकड़ने के लिए जायेंगे तो हम जरूरत के हिसाब से मछलियाँ पकड़ेंगे। कछुवों को बचाकर रखेंगे। सभी जलीय जीवों को बचायेंगे। उनको हानि पहुँचाने वाली हरेक बात को अपने साथियों के साथ मिल कर रोकेंगे। हम अपने आस–पास के पांच गाँवों में कलस्टर बनाकर काम करेंगे। जिससे समुदाय की भागीदारी बढ़ाई जा सके। साथ ही स्कूलों में जाकर बाल गंगा प्रहरी बनाने का काम भी करेंगे।

बाल गंगा प्रहरियों का कोना

गंगा नदी के महत्व और बाल गंगा प्रचारकों के रूप में स्कूलों के बीच गंगा की जैवविविधता के विषय में जागरूकता फैलाना आवश्यक है। बाल गंगा प्रहरी, बनाने का मुख्य उद्देश्य गंगा नदी के महत्व और इसके संरक्षण के बारे में उन्हें जागरूक कर संवेदनशील बनाना है। पाँच गंगा राज्यों के स्कूली बच्चों का, जिनकी आयु 18 वर्ष से कम है, परियोजना के तहत बाल गंगा प्रहरी के रूप में चयन किया गया है।

बाल गंगा प्रहरी कल का भविष्य हैं, ये जलीय जीवों के महत्व और गंगा के संरक्षण के संदेश को आगे बढ़ाने के लिए एक प्रतिनिधि के रूप में कार्य करेंगे। वर्तमान में कला, नारे लेखन एवं बच्चों के अखबार आदि के माध्यम से बाल गंगा प्रहरी नवीन विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला दिखाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे अपने माता–पिता के साथ–साथ अन्य लोगों को भी गंगा नदी एवं जैवविविधता संरक्षण के बारे में जागरूक करने की प[illegible] रहे हैं।

यही हो संकल्प हमारा

हम सब मिलकर अभियान चलाए
गंगा माँ को स्वच्छ बनाए,

खुद न करें गंदगी न किसी को करने दें
यही संकल्प हमें सबको दिलवाना है,

गाँव–गाँव तक ये परचम फहराना है
गंगा माँ को स्वच्छ बनाना,

गाँव शहर से निकले नाले जो गंगा में मिल जाते है
बंद करो ऐसे नालों को, जो गंगा प्रदूषित करते हैं,

गाँव–गाँव तक यही गीत हमें गाना है
गंगा को स्वच्छ बनाना है,

गंगा की बहती धारा को
छल–छल, छल–छल बहाना है,

गाँव–गाँव तक ये परचम फहराना
गंगा माँ को स्वच्छ बनाना।

गोपिका एवं कुर्ति यादव

इरीगेशन पब्लिक स्कूल
नरौरा, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश

मोक्षा

— डॉ0 सुधा शर्मा

गवर्नमेंट हायर सेकेंडरी स्कूल, बिलासपुर (छत्तीसगढ़) के चार बाल वैज्ञानिक व उनके शिक्षक श्री धनंजय पाण्डेय जी ने मोक्षा का अविष्कार किया। इसमें अतुल अग्रवाल (छात्र) की अहम भूमिका थी। अंतर्राष्ट्रीय रोबोटिक प्रतियोगिता के लिए रोबोटिक मॉडल मोक्षा का चयन हुआ है। यह मशीन नदी में चिता की राख (dead body) से होने वाले प्रदूषण को रोकेगी।

मोक्षा का अविष्कार क्यों किया गया?

- नदी में चिता की राख से होने वाले प्रदूषण को रोकना
- नदी की तलहट को साफ करना
- नदी के जीवों की सुरक्षा
- नदी के अन्दर की जैवविविधता का संरक्षण करना
- भूजल स्तर को रिचार्ज करना

हिन्दू धर्म में मृत्यु के बाद शरीर को जलाया जाता है और चिता की राख को नदियों में प्रवाहित किया जाता है। इस कारण नदियों को प्रदूषण झेलना पड़ रहा है। अरया नदी (छत्तीसगढ़) के किनारे कचरा डंप करने से सैंकड़ों टन कचरा नदी में पड़ गया है। समस्या यह थी कि बारिश के दिनों में नदी में पानी ज्यादा दिनों तक रूकता नहीं था। नदी सूख जाती थी।
कारण यह था कि जल अवशोषित नहीं हो पा रहा था। साथ ही यह समस्या भी थी कि अंत्योष्टि के बाद लोग चिता की राख को नदी में प्रवाहित कर रहे थे। नदी के नीचे जो छिद्र थे जिनसे वर्षा का पानी सतह के नीचे जाता था वह अब नीचे जाने की बजाय ऊपर ही बहकर निकल जा रहा था। नदी की सतह के नीचे पानी न जाने की वजह से भूजल स्तर (ground water level) रिर्चाज नहीं हो पा रहा था। इसी वजह से भूजल में गिरावट आ रही है।

मोक्षा एक बार में 20 किलोग्राम राख को फिल्टर करता है। नदी की तलहटी की सफाई करने और बंद छिद्रों को खोलने का काम भी मोक्षा रोबोट करता है। रोबोट को नदी की तलहटी में छोड़ दिया जाता है। वह नदी की तलहटी में वर्षों से जमी राख व कचरे की सफाई करता है और बंद छिद्रों को खोलता है।

मोक्षा मशीन को शमशान घाट के किनारे रख देते हैं। जब लोग अस्थि संकलन के लिए आते हैं तब उन्हें चिता की राख को नदी में प्रवाहित करने के बजाय मशीन में डालने को कहते हैं। मशीन में दो लेयर फिल्टर लगे हुए हैं। राख के साथ पानी डाला जाता है और मशीन को स्टार्ट कर देते हैं। मोक्षा मशीन चिता की राख को अवशोषित कर लेती है। इस अवशेष को खाद के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

निंजा मेरा भाई

– डॉ0 सुधा शर्मा

इतिहास में भी गंगा जल का पुण्य जल का जिक्र किया गया है। चरक ने दो हजार वर्ष पहले गंगा जल को 'पथ्य' बताया था। 'हवेन्सांग ने गंगा जल को पुण्य जल वाली' लिखा है। मुहम्मद तुगलक गंगा जल को दौलताबाद मंगवाया करते थे। उस समय गंगा जल दौलताबाद पहुंचने में 40 दिन लगते थे। जानते हो बादशाह अकबर और औरंगजेब गंगा जल पीते थे। हरिद्वार से उनके लिए गंगा जल ले जाया जाता था। धर्म, जाति और भाषा इस जल के गुणों के सामने छोटे हैं। गंगाजल से ही व्यक्ति अपने को धन्य मानता है। श्री कृष्ण ने अर्जुन से महाभारत में कहा था कि नदियों में मैं गंगा हूँ।

बात उन दिनों की है जब देश में चारों तरफ हैजा फैला हुआ था। सन् 1890, जब भारत में अंग्रेजों का शासन था, हैकिंग गंगा के पानी पर अनुसंधान कर रहे थे, उन्होंने देखा कि लोग शवों को गंगा नदी में बहा रहे थे। वह बहुत चिंतित हुए। उन्हें लगा कि जो लोग गंगा नदी में डुबकी लगा रहे हैं, कहीं उन्हें भी हैजा न हो जाए। अपने शक को दूर करने के लिए उन्होंने गंगा जल का परीक्षण (टेस्ट) किया। वे आश्चर्य चकित थे क्योंकि गंगा जल शुद्ध था। कोई बैक्टीरिया नहीं था। वे समझ गए थे गंगा जल कोई मामूली जल नहीं है।

उन्होंने लगभग 20 साल तक गंगा जल पर खोज (रिसर्च) की। उनका कहना था कि गंगा के जल में जो वायरस है वह जल में किसी और बैक्टीरिया को पनपने या जीवित नहीं रहने देता। उन्होंने इस वायरस को नाम भी दिया। इस वायरस को नाम मिला–निंजा। निंजा ही तो है गंगा जल को निर्मल रखने वाला। गंगा जल में बहुत से जलीय जीव एक साथ रहते हैं, इन जीवों के एक साथ रहने से ही गंगा जल स्वच्छ व निर्मल है। गंगा को हानि होती है मानव जनित कारकों से। गंगा जल में जीवाणु नाशिता के चमत्कारिक गुण हैं जिसका परीक्षण वैज्ञानिकों ने किया है। प्रमाण मिले हैं कि गंगा जल में असंख्य "बैक्टीरियोफेज" वायरस हैं, जिनमें जीवाणु भक्षिता (जीवाणु खाने) की अद्भुत क्षमता है। बैक्टीरियोफेज वायरस की वजह से ही गंगा का जल जीवाणु रहित है और कभी खराब नही होता।

नागपुर स्थित नीरी (NEERI) (National Environmental Engineering Research Institute) (राष्ट्रीय पर्यावरण अभियंत्रिकी अनुसंधान संस्थान) व I.I.T. कानपुर ने अपने शोध कार्य से यह पाया कि गंगा जल में आत्म शुद्धि के गुण हैं, जिस वजह से गंगा जल में जीवाणु जिंदा नहीं रहते हैं। गंगा के जल में जो वायरस है वह जीवाणुओं को खा जाता है। स्वास्थ्य मंत्रालय, केन्द्रीय जल संसाधन मंत्रालय और ऐम्स (AIIMS) के डॉक्टर गंगा के "ब्रह्म तत्व" (X mystery factor) की खोज कर रहे हैं।

गंगा में ब्रह्म तत्व (X mystery factor) हैं यह सब मानते हैं लेकिन उसे वैज्ञानिक आधार देने की कोशिश जारी है। खोज कर्ताओं का कहना है कि गंगा के "ब्रह्मम तत्व" का जिक्र पुराणों में भी है और आज जब वैज्ञानिक गंगा जल का परीक्षण कर रहे हैं तो उनकी शोध की पड़ताल पुराणों से मेल खाती दिख रही है। पूरे शोध का निचोड़ जल्द ही सामने आ जाऐगा। गंगा जल में विगलित ऑक्सीजन (dissolved oxygen) की मात्रा अधिक है। आचार्य सद्गुरू (योगिक गुरू) ने गंगाजल को विशिष्ट बताया है। वे कहते हैं कि गोमुख के गंगाजल का एक गिलास पानी पीने से आप पूरे दिन भूख महसूस नहीं करेंगे और ऊर्जावान भी रहेंगे।

आज हम केवल गंगा जल के सकारात्मक पक्ष (Positive) को आपके सामने रख रहे हैं। अभी तो हमने प्रदूषण की बात ही नहीं की। पहले हम सबको यह समझना चाहिए कि मानव जिस जल को दूषित कर रहे हैं, वह अमृत है। देश–विदेश के लोग भी गंगा की वर्तमान स्थिति को देखकर बोलते होंगे कि भारतीय कितनी मूल्यवान सम्पदा को अपनी नासमझी व असहनशीलता की वजह से गवाने के लिए आतुर हैं। हम सब उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है, यह बात भूलना नहीं। शिक्षा हमें सिखाती है कि हमें अपनी प्राकृतिक सम्पदा को नष्ट होने से बचाना है और यह तभी होगा जब बच्चे भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित करेंगे। **"हमें तो इतना ही कहना है कि मानो तो गंगा माँ है, ना मानो तो बहता पानी"**।

हमारे दस्तावेज

पोस्टर तथा ब्रोशर समुदाय को जागरूक करने के सरल माध्यम होते हैं, इनके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँच आसान हो जाती है। हमारे द्वारा आम आदमी तक पहुँच बनाने के लिए एवं जलीय जीवों के संरक्षण तथा वर्तमान में उनको हानि पहुँचाने वाले कारकों से अवगत कराने हेतु सस्ते व मंहगे ब्रोशरों का प्रकाशन किया गया है। बच्चों को जागरूक करने तथा रोचक तरीकों से अपनी बात उन तक पहुँचाने के लिए बाल कविता पुस्तिका, कविता पोस्टर तथा बच्चों के अखबार का निर्माण किया गया है। दस्तावेज काम को स्थायित्व प्रदान करते हैं, इस बात का ध्यान रखते हुए दस्तावेजीकरण पर विशेष ध्यान दिया गया है।

ब्रोशर (अंग्रेजी)

स्टैण्डी

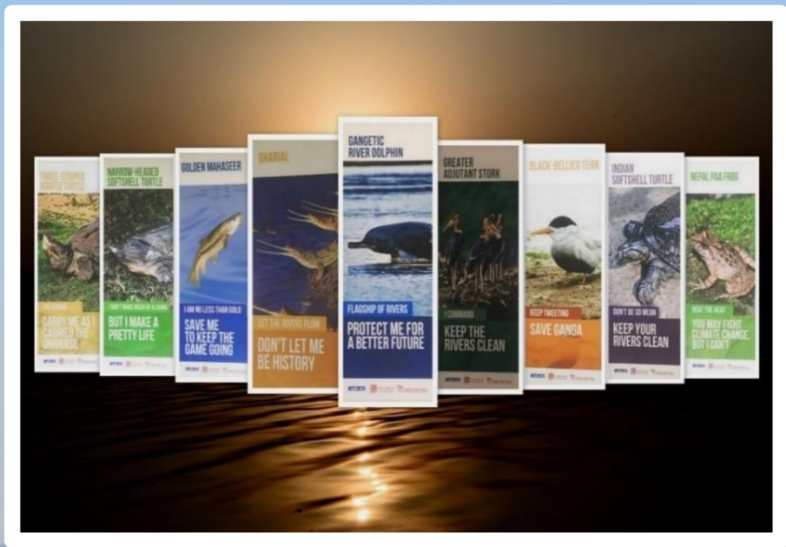

पुस्तकें

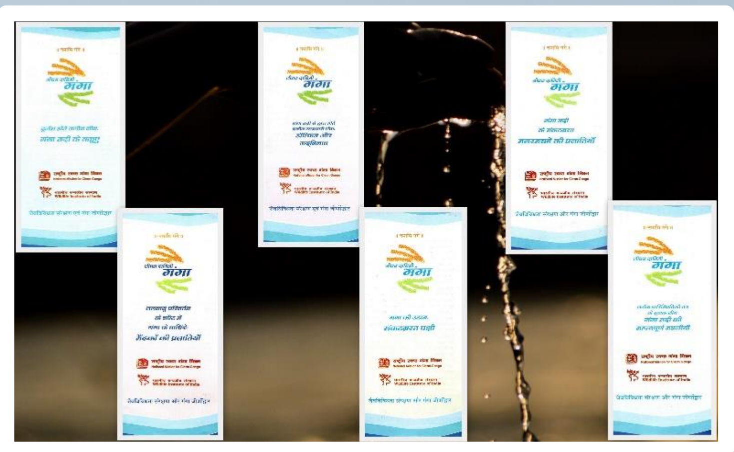

बच्चों का अखबार

ब्रोशर (हिन्दी)

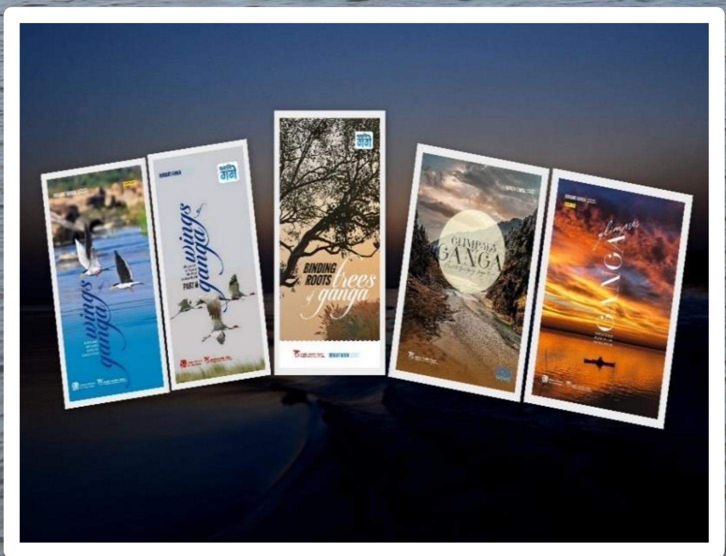

NMCG

National Mission for Clean Ganga, Ministry of Water Resources, River Development & Ganga Rejuvenation

GACMC

Ganga Aqualife Conservation Monitoring Centre

Wildlife Institute of India

Post Box #18, Chandrabani Dehradun - 248001 Uttarakhand, India t.: +91135 2640114-15,

+91135 2646100

f.: +91135 2640117

www.wii.gov.in/national_mission_for_clean_ganga